।। अथ सत्तगुरू सुखरामजी महाराज की जीवनी ।।
मारवाडी + हिन्दी
(१–१ साखी)

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ सत्तगुरू सुखरामजी महाराज की जीवनी ||

– आप की आप जाणो –

|| वंश परिचय लिखंते ||

|| दोहा ||

गुजर गोड पंचारिया || संत सुखदेवजी नाँव ||
भरत खंड मारू धरा || बास बिराही गाँव ||

गुजर गोड पंचारिया बिराहीवाले गोपाळजी गोपाळजी के बेटे(पुत्र)रुघनाथजी रुघनाथजी के बेटे खेताजी,खिवाजी और देधाजी,देधाजीका आइदानजी,सावलजी । आइदानजीकी(पत्नी)जोडायत थिरपाल उपाद्या कनीरामजी कूडीवालाकी बेटी बगतू जिनके सुखरामजी महाराज और तुळछाजी । सतगुरु सुखरामजी महाराज की(पत्नी)जोडायत पहली सांख्या की कल्लु जिनके किसनाजी दुसरी रत्नाजी की पन्ना जिनके सुजाजी,बगतरामजी मानजी और तिसरी बार महाराज का विवाह हुआ वह जमराज की भेजी हुअी मृत्यूलोक मे आयी । महाराज की सतसंगत मे कोई आता उन्हे सतसंग आनेके लिये मना कर देती थी और गालीयाँ निकालती थी । और रोटी बनाते रहे तो चुल्हे मे पानी डालकर इस्तु के निखारे बुझा देती थी । और गालीया निकालकर बोलती थी की,तुम यहाँपर क्यो आते हो?हमे कमाई करकर खाने दोगे की नही ।

|| अथ सत्तगुरू सुखरामजी महाराज को जनम वर्णन ||

सत्तगुरू सुखरामजी महाराज की देही को जनम समत १७८३ चेत शुध्द ९ गुरूवार पुष्य नक्षत्र, अभिजित तारिक ४–४–१७२६ ने हुवो ||

सतगुरु सुखरामजी महाराज के देही का जनम समंत १७८३ चेत्र शुध्द ९ गुरुवार पुण्य नक्षत्र तारीख ४–४–१७२६ को हुआ ।

|| रेखता ||

संत सुखराम घर द्विजे के जनमियाँ || बेद गत्त छाड निज नाँव धाया ||
भगत के काज भगवान मुज भेजिया || हंस चेतावणे काज आया ||
ब्रम्ह दरबार सूं मोहोर परवानगी || अणभे बाच सुणाय देऊँ ||
जुग में जीव कोई आण कर भेटसी || काळ का मुख सूं काढ लेऊँ ||
तांहि मे फेर तिल मात मत जाणज्यो || राम गुर देवजी शीश म्हारे ||
दास सुखराम हर हुकम सूं आविया || सरण का जीव कूं राम तारे ||

|| कुंडल्या ||

बरस तियाँसे लागते || चेत मास गुरूवार ||
तिथ नवमी पख चानणो ||सुख जनम्याँ संसार ||
सुख जनम्याँ संसार || समत्त सत्तरासे मॉहि ||
जम घर उपज्यो सोग || नरां घर बटी बधाई ||

अठरासो तेहोत्तरे ।। पोथा मोख दुवार ।।
बरस तयाँसे लागते ।। चेत मास गुरूवार ।।

। सत्तगुरू सुखरामजी महाराज को जीव गर्भ में नहि आया जिणरो वर्णन ।

सतगुरु सुखरामजी महाराज की जिवणी लिखणेवाले महाराज गर्भ मे आये करके २ तथा ३ बार वर्णन कर दिया । महाराज का जीव गर्भवास मे से नही आया था । गर्भवास मे दुसरा जीव था । जन्मने के बाद उनकी देह मे हसली ढलती थी तब एक बुढी माळनी हसली मसलकर ठिकाणेपर बिठा देती थी । एक दिन हसली ढल गअी उस दिन वह हसली मसलकर बिठाणे वाली बुढी माळनी गाँव मे नही थी । इस वजह से महाराज की माताजी बगतुबाई जैसे बुढी माळीन हसली ठिकाणे बैठाती उस तरह से महाराज के देही का गला पकड्कर हिलाया जिस वजह से गले की नसे टुट गअी और वह जीव उस देही मे से निकल गया और वह देही मृतक हो गयी । मृतक देही को थोडी देर लेकर बैठे रहे फिर उस देही मे महाराज के जीव ने प्रवेश किया और देही मे चेतनता आ गयी । फिर गले को सोना,संख,शहद मे घिस घिसकर लगाया । जिस से अच्छे तो हो गये लेकिन नसे तुटने की वजह से जो निशाण थे वहा पर गले के बाहरसे दाये बाजु गांठे बंध गई । उन गांठो मे दो मोटी और एक छोटी थी । गांठे आखरी तक बाहर उबरी हुअी दिखती थी । गांठे किस तरह बनी यह बात माताजी के मुँहसे सुनी और गांठो को हाथ लगाकर देखा ।

।। अथ च्यार गुराँ को बर्णन ।।

।। पद राग आसा ।।

प्रभूजी मै किसका सरणाँ धारूं ।। भोळप माँहि किया गुरू च्यारी ।।
को तज किस बिन सारूं ।। टेर ।।
किरपा करे हमारे मॉहि ।। नॉव केवळ हरि आया ।।
ताँ पीछे गुरू भोळप माँही ।। लालदास कूं खाया ।।१।।
बाणी कहुँ रीत बोहो भारी ।। सबद पिछम दिस धावे ।।
तब मै छाड़ लाल कूं दीया ।। बूजा अर्थ न आवे ।।२।।
रामदास के दर्शण आया ।। पूजा ढेल चढाई ।।
तब जन राम बूजणे लागा ।। को गुरू तेरा भाई ।।३।।
तब मै कहयो गुरू हे बीरम ।। निज पद मोही बताया ।।
मेरे रीत बणी हे अेसी ।। मे परखावण आया ।।४।।
जब जन रामदासजी बोल्या ।। रीत पकी हे थॉरी ।।
थॉको भेव अग्या सुण लीया ।। बोहोत बणेगी भारी ।।५।।
बीरमदास यांही का चेरा ।। इशा भेद मुज दीया ।।
जब मे जाय सुण्यो भाई अेसी ।। रामदास गुरू कीया ।।६।।

बूजा बांत बीरमजी खीज्या ।। जाब मुजकू दीयो ।।
मुज कूं करे डेढ को चेलो ।। दगो रामदास कीयो ।।७।।
च्यारी गुरू इसी बिध कीया ।। सुणो संत सब कोई ।।
अडवी पड़ी न्याव सब कीजे ।। सत्तगुर कहो कुण होई ।।८।।
मेरे बस कछु अब नाही ।। बांत गई हे फेली ।।
हरजन साध संत सुण सायब ।। राम करे सो व्हेली ।।९।।
मै मत्त हीण बुध्द सुण ओछी ।। अकल नही तन माँही ।।
के सुखराम रखे जा रूँला ।। सुण हो आद गुसांई ।।१०।।

प्रभुजी मै किसका शरणा धारण करु । मैने भोलेपणमे च्यार गुरु धारण किये । अब मै किसका शरणा धारे रखु व किसका शरणा त्यागन करु । कृपा करके मेरी यह दुविधा मिटा दो । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की मुझे समंत १७७१ मे हरी के दर्शन हुअे जिससे मेरे घटमे कैवल्य नाम प्रगट हो गया व वह नाम देहमे पश्चिमके रास्तेसे दौड्णे लगा । मेरे सभी परिवारके गुरु मेलाणा के लालदासजी दादुपंथी थे । इसकारण मैने भी भोलेपण मे लालदासजी को गुरु धारण किया । हरी के रुपमे पाये हुअे केवली सतगुरु के प्रताप से कैवल्य शब्द मेरे देह मे पिछे के रास्ते से दौड्णे लगा व मेरे मुखसे अमर लोक की जिसमे तीन लोक के त्रिगुणी माया का जरासा भी अंश नही अैसी भारी वाणी कुद्रती निकलने लगी । मै यह पश्चिम के रास्ते से होणेवाले अनुभव को समज लेने के लिये गुरु लालदासजी के पास गया व घटमे बिते जा रही है उन अनुभव की सारी बाते पुछने लगा तो लालदासजी उसपर जरासी भी ज्ञान समज नही दे पा रहे थे उलटा भ्रम मे अटका रहे थे इसलीये मैने लालदासजी गुरु का त्याग किया । आगे मुझे बिरमदासजी महाराज गुरु मिले । उनसे मुझे निजपदकी समाधी लग गई । यह निजपद की ध्यान की स्थिती परखाने के लिये मै रामदास जी के दर्शन गया । उन्हे पुजा टेहेल चढाई । पुजा टेहेल चढाणेपे रामदासजी ने मुझे तम्हारे गुरु कौन है यह पुछा । तब मैने रामदासजी से कहा की मेरे गुरु बिरमदासजी है व उनके प्रतापसे मुझमे निजपद प्रगट हुआ । यह निजपद की रित परखाने के लिये मै आपके पास आया । तब रामदाजी बोले की तेरे घट मे प्रगट हुअीवी रित पक्की है परंतु यहाँ का भेद व आज्ञा लेनेसे तुझमे प्रगट हुअी वी निजपद की रित और भी भारी बनेगी । बिरमदास यही का चेला है ऐसी बात रामदासजी ने मुझे बताई । रामदासजी की यह बात सुणकर मै रामदासजी का चेला बन गया । गुरु बिरमदासजी मिलने पे मैने गुरु बिरमदासजी से पुछा की आप रामदासजी के चेले है ना तब बिरमदासजी ने कहा की मै रामदासजी का चेला नही हुँ । मै रामदासजीका चेला हुँ यह रामदासजी तेरे साथ झुठ बोले व कपट खेलकर दगेसे तुझे शिष्य बना लिया । इसप्रकार मैने च्यार गुरु धारण किये । इसलीये प्रभुजी व प्रभुजीके सभी संत चार गुरु

करनेकी मुझपे बिती हुअी कहाणी आप सभी ध्यान देकर सुणो । अब मैने किसे गुरु समजना व किसे गुरु नही समजना यह मेरे समजमे नही आ रहा इसलीये आप सभी मेरे इस अड्वी समज को ग्यानसे न्याय कर मेरे सच्चे सतगुरु कौन कौन है यह मुझे बताओ । चार चार गुरु करनेसे मेरे निजपद के भेदी सतगुरु कौन है यह बात समजना मेरे हाथसे निकल गअी है इसलीये आप सभी हरीजन केवली साधु संत एवम् रामजी साहेब आप जो न्याय करोंगे वही मेरे लीये सिरोताज रहेगा । मै मतहीन हूँ । मेरी बुध्दी ओछी है । मेरे तनमे यह समजने की अक्कल नही है । इसलीये आद गुंसांई आप ही मेरा न्याय करो व आप मुझे जो गुरु बताओंगे उनके शरण मे रहुँगा ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजने रामजीसे व सभी केवल ज्ञानी संतोसे खुदको सच्चाई समजनेके लीये विन्रमतासे पुछा ।

॥ रेखता ॥

मुरधर देश मे गाँव कुड़ी बसे ॥ संत सुखराम जहाँ भगत किवी ॥
समत्त अठारा सो बरस चोवीस मे ॥ मास आसाढ हर सरण लीवी ॥
वार गुरूवार सुण पख सो सुध थो ॥ तिथ सो तीज ता दिन होई ॥
लिख के नाँव हिरदे उर धारियो ॥ सुणो प्रणाम सब संत लाई ॥

महाराज से भगवंत ने आकाशवाणी मे कहा काठ मती काठ भगत भजन कर आव मुझ पासही आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज घरपे रसोई के लिये पेडपर चढकर लकडा काट रहे थे तब गेबाऊ वाणी हुअी की हे भक्त तु लकडे काटने मे मत लग । तु कैवल्य भक्ती कर मेरे पास मेरे सतस्वरुप के पद मे आ । समंत १८०८ के साल महाराज गेंहूँ लाने के लिये मारवाड से गुजरात गये और वहाँ उनके साथमे आते समय और भी कुछ गॉव की गाडीयाँ थी । फिर सभी बैलगाडीयों वालो ने और महाराज ने नर्मदा के किनारे मुक्काम किया । वहाँ पर महाराज पानी लाने के लिये नर्मदा के किनारे वाली सिढीयो की बावडी(छोटा कुआँ)मे गये । बडा लोटा पानीसे भरकर बाहर आये तो गेबाऊ गेबीदास जी मिले । इसलीये महाराज जी ने गेबाऊ प्रगट हुअे इसलिये उन्हे गेबीदासजी नाम से बोला । महाराज बावडी मे से बडा लोटा(घडा)भरकर जल लाये थे वह पिला दिया । और दुसरी बार का भरा हुवा जल का लोटा भी लाया हुआ पी गये । और तिसरी बार का जल भरके लाया हुआ लोटा भी पी गअे चौथी बार महाराज बावडी मे से जल का लोटा भरकर लाये तब बाहर आनेपर देखा गेबीदासजी बाहर नही मिले । जब महाराज वहाँपर ही बैठ गये और साथवाले गाडीवाले आये और महाराज को वहाँ से चलने के लीये कहने लगे । तब महाराज बोले हम तो यहाँ से चलेंगे नही यहाँपर ही रहेंगे । तो साथ वालो ने कहाँ की आपकी गेंहुओं के बोरे की गाडी और बैल कौन ले जायेगा । तब महाराज बोले की गेंहुओं के बोरे का गाडा तो लुटा दो और बैलो की नाथ निकाल कर उन्हे छोड दो । हम तो यहा से चलेंगे नही । फिर साथ वाले लोगो ने महाराज को समझा बुझाकर बिराही ले गये ।

यह बात समंत १८०८ मंगसर बदी ७ गुरुवार की है ।

|| अथ महाराज को प्राक्रम प्रारंभ ||

|| साखी ||

मै आयो इण कारण भाई || सो प्रगट सुण ले जुग माँही ||
ने:अंछर खाण्डो सुण होई || वो नॉव ब्रम्ह को कहे न कोई ||
सो ने:अंछर दे मुझ तॉई || सत्तगुरू भेज्यो या जुग मॉई ||
आतम हंस जाय के लावो || पार ब्रम्ह के लोक पठावो ||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की मै सतस्वरुप परमात्मासे मृत्युलोक मे के हंसोको अमरलोक को पठाणेवाला ने:अंछर ले आया हु यह सभी जगत के ग्यानी ध्यानी नर–नारी सुण लो । जैसे राजा राणी के साथ विवाह के लिये कहॉ कहॉ जा सकता है व कहॉ कहॉ नही जा सकता वहा पे राजा अपना खांडा प्रधान के साथ भेजकर उस राणी के साथ विवाह बध्द हो जाता है । वह राणी राजा के राजमहल की राणी बनती है । इसीप्रकार सतस्वरुप सतगुरु ने मुझे ने :अंछर रुपी खांडा देकर धरती पे भेजा है व हंस रुपी सभी आत्माओंको काल के जबडे से निकालकर महासुख के सतस्वरुप पारब्रम्ह के लोक मे भेजने को कहाँ है ।

|| साखी ||

अनंत क्रोड आगे जन आया || आतम हंस ब्यावणे भाया ||
सोई रीत हमारी होई || ब्रम्हा रीत ओर कहुँ तोई ||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की जगतमे जीव तारणे के लिये आगे भी अनंत संत इस धरती पे आये व आत्महंस को सतस्वरुप पारब्रम्ह राजा के ने:अंछर खांडा के साथ विवाह कर सतस्वरुप पारब्रम्ह के महासुख के पदमे पहुँचाया है । यही रित मेरी है । सतस्वरुप पारब्रम्ह के लोक मे पहुँचाने के विपरीत काळरुपी पारब्रम्ह के मुखसे रखने की ऐसी मेरे रितके विपरीत चार वेदोके कर्ता ब्रम्हा कराने की है तो ब्रम्हा की रित पर्चे चमत्कार कर्मकांण्ड कराके हंसोको काल के मुखमे रखनेकी है ।

|| कुंडल्यो ||

अणभे हेला देत हुँ || सुण लीज्यो निज दास ||
ब्रम्ह लोक की चाय व्हे || सो आजो मम पास ||
सो आज्यो मम पास || ब्रम्ह के मॉय मिलाऊँ ||
जतन करूं बोहो भाँत || संग कर ले मै जाऊँ ||
सुखराम हंसा के कारणे || देहे धारी जुग बास ||
अणभे हेला देत हुँ || सुण लिज्यो निज दास ||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की जहाँ काल के दु:ख जरासे भी नही है तथा सुखोके पिछे सुख है ऐसे निजदेश की वाणी मै हंसो तुम्हे सुणाता हुँ । जिसे निजदेश की

चाहणा है ऐसे सभी निजदास मेरे ग्यान वचन ध्यान दे के सुणो । जिसे जिसे महासुख के सतस्वरुप ब्रम्हकी चाहणा है वे सभी मेरे पास आवो । मै मेरे पास आनेवाले सभी को काल से निकालकर सतस्वरुप पारब्रम्ह मे मिला दुंगा । मेरे शरण मे आये हुवे हंस जबतक सतस्वरुप ब्रम्ह मे मिलते नही तबतक मै उन सभी हंसोका काल के दु:खसे जतन करता हुँ । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की मैने सतस्वरुप ब्रम्ह से मिलनेकी चाहत रखनेवाले निज हंसोके लिये ही मृत्युलोक मे यह पाँच तत्व का देह धारण किया है ।

|| साख ||

सुखराम जीव सुळझाय के || जम सूं लेऊँ छुडाय ||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,मै मायाके सुखोमे उलझे हुये जिवोको सतग्यान दे देकर माया के सुखोमे यम के दु:ख कैसे है व वह यम मायाके सुखोमे जिवोको अटकाकर जिवोको कैसे दबोचता है यह समजाता व ऐसे मायाके सुखमे उलझे हुये जीवो को सुखोमे की दु:खोकी समज देकर सुलजाता व सतस्वरुपके कोरे दु:ख रहित सुखोमे ले जाता ।

|| साख ||

मै सत्तगुरू हुँ आद का || आतम का गुरू क्राय ||
मेरी मेहमा अगम हे || क्या जाणे जग मांय ||
क्या जाणे जग माँय || काग बुध्द ग्यानी सारा ||

आदि से दो पद है सतगुरुपद व मातापिता पद सतगुरु पद ग्यान सुखोसे भरपुर भरा है । व मातापिता पद काल दु:ख से भरपुर है । काल दु:ख से निकलना है तो सतगुरु पदका शरणा लेना चाहिये । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सतशब्द,ने:अंछर,कुद्रतकला के रुपमे कहते है की,मै सतशब्द,मै ने:अंछर,मै कुद्रतकला आदिसे सतगुरु हुँ । मेरी महिमा अगम है । याने मुझमे सभी आत्माओंके सदाके लिये जमके मुखसे निकालकर परमात्माके महासुखमे पहुँचाने का बल है । इस मेरे अगम बल को हंस स्वरुपी जीव ही जाणते है । कौआ बुध्दीवाले ग्यानी, ध्यानी नर नारी मेरे इस पराक्रम को जाणते नही । हंस बुध्दीवाले जिव याने जैसे हंस को दुध और पानी न्यारा न्यारा करते आता व न्यारा कर कर पानी त्यागकर दुध प्राशन करते आता अैसे ही ब्रम्ह व माया जीस जीव को न्यारा न्यारा करते आता व ब्रम्ह के शरण जाकर काल त्यागते आता उन्हे हंस बुध्दी के नर नारी ग्यानी ध्यानी कहते । जिस जिवको हंस के समान दुध व पाणी न्यारा न्यारा नही करते आता व साथमे दुध को पाणी से न्यारा न करके पिनेकी चाहणा भी नही रहती उलटा मांस मच्छी समान निच वस्तु खाने का स्वभाव रहता ऐसे जिवो को कौआ बुध्दी के जीव कहते । ये कौआ बुध्दी के जीव,हंस रुपी जीव जिस सतस्वरुप ब्रम्ह को धारण करते उसका त्याग

करते उससे द्वेष करते व हंस बुध्दीके जीव जीस मायाको त्यागते उस माया से प्रित करते व सदाके लिये काल का ग्रास बनते ।

|| साख ||

युँ हंस मोसू मिलत ही || गिगन चडे कहुँ तोय ||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की ऐसे हंस बुध्दी के जीव मुझसे मिलते ही उनके छः पुर्व के व छः पश्चिम के कमल छेदन हो जाते व वे दसवेद्वार गिगन मे पहुँच जाते ।

|| साख ||

सुखराम हंस मोकू मिल्या || ता कूं लांगु पार ||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की जो हंस मुझे मिलते है उन्हे मै भवसागर से पार कर देता हुँ ।

|| साख ||

मै आयो संसार धार कारण इण सोई || सत्त लोक नर नार लेर जाऊँ सब कोई ||
सुखराम कहे सत्त स्वरूप की || आ अग्या मुझ होय ||
हंस हंस सब भेज दे || जुग मे रखो मत कोय ||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की मै मायाके असत लोकसे सभी नर–नारीयोको सतस्वरुप के सतलोक को ले जाऊँगा यह धारणा रखकर जगत में मैने देह धारण किया हुँ । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की मुझे सतस्वरुप ने सभी हंस हंस को माया के देश मे न रखते सतलोक मे भेजने की आज्ञा की है व वैसा सभी हंसो को सतपद भेजनेका औदा देकर मृत्युलोक मे भेजा है ।

|| साख ||

हम कूं साहेब यूँ कह्यो || मरत लोक मे जाय ||
काळ मार सुखराम के || लीज्यो हंस छुडाय ||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज समाधी मे साहेब के देश मे गये और साहेब से आज तुलसाजी को नही लाना यह कालपर हुकुम लगवाया तब साहेब ने आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज को कहा की तुम इस समाधी देश मे न रहते मृत्युलोक मे जावो और काल को मारकर हंसो को काल से छुडावो ।

|| साख ||

साहेब के सुखराम कूं || काळ मरे किण रीत ||
मै तुम में गुण मेल सूं || तम हंस लासो जीत ||

साहेब ने आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज को कहा की काल जिस विधी से मरता है वह गुण मै तुममे प्रगट करा दुँगा जिससे तुम हंसो को काल से जितकर सहज छुडा लेंगे ।

|| साख ||

मोख पंथ बेंतो कियो || मै सत्तजुग में आण ||

अंनन्त जीव सुखराम के || लिया मोख दिस ताण ||
रात दिन पंथ बे रहयो || निमक ढील नहिं खाय ||
सुखराम जम के शीश पर || लात देर हंस जाय ||
अेंता हंस हम तारिया || त्रेता जुग देहे धार ||
सुखराम क्रोड निनाणवे || हंस किया सो पार ||
क्रोड जीव मोसूं मिल्या || द्वापुर में जे आय ||
सुखराम मोख कूं भेजीया || चोडे तबल बजाय ||
मोख पंथ जम राय के || शिर ऊपर होय जाय ||
रात दिन सुखराम के हंस रहया शिर गाय ||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,मैने सतयुग मे शरीर धारण कर मोक्ष मे ले गया । यह मेरा मोक्ष का पंथ रातदिन बह रहा है । जरासे समयके लिये भी ढील नही खाता । यह मेरा मोक्ष पंथ का रास्ता जम के सिरपर पैर रखकर आगे जानेका है । मैने त्रेतायुग मे निन्यावे करोड हंसोको भवसागर से पार लंघाया वैसे ही एक करोड हंसो को द्वापार मे मोक्ष के पद मे भेज दिया । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की मैने यह मोक्ष का मार्ग यमको जागृत कर यम के सिर की पायरी करके निकाला । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की यह मोक्ष पंथ रातदिन बह रहा व इस पंथसे अनंत हंस सहजमे मोक्ष मे गअे व जा रहे ।

मात पितां दोना कूं तारूं || जे गम पूछे मोई ||

इच्छा माता व पारब्रम्ह पिता अगर मुझे मोक्षका रास्ता पुछेंगे तो मै उनको भी मोक्षका रास्ता बताकर इस सृष्टी को बसाना व मिटाना इस चक्कर से तार दुँगा ।

ऊत्तर || साखी

पूरण ब्रम्ह पिता हे मेरा || अंछया मात कहावे ||
अब दोना कूं मोख पहुँचाऊँ || जे मुझ सरणे आवे ||

परापरी से दो पद है । वैराग्य याने सतगुरुपद व गृहस्थी याने मातापिता पद आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है जैसे मेरे देह के देहधारी माता पिता है वैसे मेरे जीव के पुरणब्रम्ह ये पिता है व त्रिगुणी माया यह माता है । ये दोनो गृहस्थी भोग मे सृष्टी बनाना,सृष्टी चलाना व सृष्टी मिटाना ये दृष्ट चक्र मे अनंत युगोसे उलझे है व अशान्त है । मै अभितक इनका पुत्र था । अब मै सतस्वरुप वैराग्य गुरु का शिष्य बना हुँ । मुझमे जगतके सभी आत्माओको लेकर पुरण ब्रम्ह पिता व त्रिगुणीमाया माता को तारणेतक का सतविज्ञान प्रगट हुआ है व इस सतविज्ञान सत्तासे मै मेरे जिवके माया त्रिगुणी माया व पिता पारब्रम्ह को इस सृष्टी बनाना चलाना व मिटाना इस जंजाळ से मुक्त करा सकता व सतस्वरुप विज्ञान के महासुखमे माता पिताने दृष्ट गृहस्थी चक्र चलाके जिवोको उसमे

अटकाना व अटकाकर उन्हे झुठे,अतृप्त सुखकी लालसा देकर नरक सरीखी यातना भोगवाना यह कुबुध्दी त्यागनी चाहिये व निर्मल बनकर मेरे सत्ताके शरण मे आना चाहिये । इससे जैसे मै जगत के नर–नारी को आवागमन चक्कर मे फसनेसे छुटकारा कराता हुँ वैसे ही जगत के नर नारी को आवागमन के चक्कर मे फंसानेका स्वभाव से मेरे मायामाता व पारब्रम्ह पिता को छुव्वा सकता हुँ व इन माता पिता मे वैराग्य विज्ञान प्रगट करा कर उनमे सदा के लिये सतवैराग विज्ञान का आनंद प्रगट करा देकर मोक्ष मे भेज सकता हुँ ऐसे आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ।

|| साख ||

तीन लोक में जे नर नारी || सब कूळ मेरो होई ||
मार बाप सेत सब नारी || जे गुरू धर्म पकड़े कोई ||

तीन लोक १४ भवन व तीन ब्रम्हके १३ लोकोमे जो नर नारी है वे सभी मेरे कुलके वासी है । मेरे भाई बहन है । व पुरणब्रम्ह व इच्छामाता ये मेरे माता पिता है । मैने जो गुरु धर्म धारण कर दु:खोंसे मुक्ती लिया ऐसे ही जो जो मैने गुरुधर्म धारण किया उसके शरण मे आयेंगे वे सभी दु:ख भरे गृहस्थी जंजाल से मुक्त हो जाओंगे व सदा के लिये महासुख के पदमे पहुँचेंगे ।

|| साख ||

मै सत्तगुरू का खासा चाकर || सनद दिवी गुरू मोई रे ||
अनंत हंस मै ले उधरूला || सुण लिज्यो सब कोई रे ||

मै भी मेरी इच्छामाता व पुरणब्रम्ह पिता तथा सभी आत्माओके समान विकारी भोग माया मे अटका था । सतगुरु ज्ञान मिलनेसे मेरी माया के सुखोमे उलझी हुअी समज सुलझी व मैने प्रेम प्रितसे शुर विरता से सतगुरु का ग्यान धारण किया । आज मै आवागमन के चक्र से मुक्त हुआ व सतगुरु का खासा चाकर याने खास शिष्य बना । ये मेरे खास शिष्य बनने से मुझे काल के चक्र से जगत के सभी नर नारीयो को निकालनेका औदा सतस्वरुप सतगुरु ने दिया । इस सत्ता के औदे से मै अनंत जीवो का उध्दार करुँगा ये मेरे सत्ताका पराक्रम आप सभी नर नारी सुणो व स्वयंम का उध्दार चाहते हो तो मेरे सतग्यान के शरणमें आवो ।

|| साख ||

च्यार जुग में केवळ भक्ति || मै हंस आण जगाया रे ||
सब हंस लेर मिलूंगा गुरू सूं || आणंद पद मे भाया रे ||

जैसे सप्ताहके वार सोम,मंगळ,बुध,गुरु,शुक्र,शनि,रवि ऐसे सात रहते सात के अलावा आठवा वार कभी नही रहता उसीप्रकार त्रेचालीस लाख विस हजार सालमे चार युग रहते । इस चार युगोके परे जैसे सप्ताहका आठवा वार नही रहता ऐसे कोई पाचवाँ युग नही रहता । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते मैने आदिसे आज दिन तक आये हुअे

सभी चारो युगोमे हंसोमे कैवल्य भक्ती प्रगट की व मोहमाया के घोर अंधेरी रात से चेताया । मै ऐसे सभी हंसोको काळरुपी पिता पदसे निकालकर सुखरुपी गुरुपद याने आनंदपद मे मिलुँगा ।

|| साख ||

केईक भेज दिया मै आगे || जुग जुग हंसा भाई रे ||
बोहोत हंसा की अग्या मोने || ताते रहुँ जुग माही रे ||

मेरा आनंदपद मे भेजनेका कार्य युगान युग से चल रहा । मैने आज के पहले अनंत संत आनंदपद मे भेज दिये व आगे भी अनंत हंस आनंदपद मे भेज दुँगा । सतस्वरुप की सभी हंस आनंदपद मे भेज देने की मुझे आज्ञा है इसलीये मै आनंदपद भेजनेका औदा लेकर पाँच तत्व का देह धारण कर मृत्युलोक मे आया हुँ ।

|| साख ||

केइक जीव आगला में सूं || सुण मो पासे आवे रे ||
दर्शण करत नाँव प्रकासे || रग रग तन सुख पावेरे ||
नवा हंस परमोद जुग में || जिण कूं बोहो दिन लागे रे ||
उनका भरम सकळ सो भाग्या नॉव घट मे जागे रे ||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की सतस्वरुप का अंश प्रगट हुये परन्तु सतस्वरुप नही पहुँच पाये ऐसे कई जिव मै प्रगट होने के बाद मेरे पास आते है व वे मुझसे मिलते ही मतलब मेरा ग्यान ध्यान सुणते ही दसवेद्वार मे पहुँच जाते है व उनके शरीरके रोम रोम मे सतनाम का सुख प्रगटता है । परन्तु जिनमे सतस्वरुप का अंश कभी नही पडा ऐसे भी अनंत नये हंस मेरा ग्यान ध्यान सुनकर मुझे मिलते है । उन्हे अनेक दिनोतक उपदेश पे उपदेश देने पे उनका माया आज नही तो कल पुर्ण दु:ख हरण कर पुर्ण सुख देगी यह भ्रम नाश होता है व यह समज जाता है की माया यह कभी पुर्ण सुख नही देगी उलटा पुर्ण दु:ख मे डालेगी व पुर्ण सुख चाहिये तो माया त्यागनी चाहिये व तृप्त सुख देनेवाला सतशब्द धारण करना चाहिये यह समज आती है । तब वे हंस माया को त्यागकर मेरा याने सतनाम का शरणा लेते है व सतनामका ग्यान सुन सुनकर उनके तनमे सतनाम प्रगट होता है ।

|| साख ||

केवळ भक्त कोई नहिं जाणे || भरमा भरमी गावे रे ||
पार ब्रम्ह लग निर्गुण पोंचे || फिर फिर पाछा आवे रे ||

इस जगतमे सतस्वरुप केवल भक्ती कोई ग्यानी,ध्यानी,साधु,सिध्द नर–नारी नही जाणते ये ग्यानी ध्यानी साधु सिध्द नर नारी होणकाल पारब्रम्ह को सतस्वरुप केवल समजकर उसमे भर्माये जाते व उसकी साधना साधते व पारब्रम्ह(होणकाल)मे पहुँचते व जैसे आदि मे पारब्रम्ह से माया मे आये ऐसे ये सभी हंस बार बार पारब्रम्ह मे पहुँचते व वहाँसे माया

मे सुख दु:ख मे पड्ते ।

|| साख ||

सुरगुण निरगुण कर कर भक्ति || सब रिख पच पच मूवा रे ||
आवागवण मिटी नही कोई || पद सूं रेगा जूवारे ||

जगतके सभी ऋषी मुनी सरगुण याने रजोगुण याने ब्रम्हा,सतोगुण याने विष्णु,तमोगुण याने महादेव तथा निरगुण याने पारब्रम्हकी भक्ती कर कर थक जाते व अंतीममे मर जाते लेकिन इन ऋषीयोका,मुनीयोका आवागमन कभी नही मिटता व वे आनंदपद से दुर रह जाते ।

|| साख ||

मो कूं दया तुमारी आवे || सुण लिज्यो नर नारी ||
सत्त स्वरूप की भक्ति बिना रे || फंद पड़े शिर भारी रे ||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी नर नारीको कहते है की तुम्हारे सभी के गले मे गर्भवास,बुढापा,कालके सहे न जाणेवाले अनंत दु:ख आ आकर पड़ेंगे । ये क्रुर दु:ख तुम्हारे से सहे नही जायेंगे । यही दु:ख मुझपे पडे थे व मुझे सतगुरु मिलने पे मै इन दु:खोसे निकल गया ऐसे ही तुम भी निकल सकते ये मै जाणता इसलीये मुझे तुम्हे यह दु:खसे निकलनेकी रित बतानेकी दया आती ।

|| साख ||

करणी बिनां गिगन दुं चाडी || अेक पोहर पल मांही रे ||
मुद्रा कूंची नहि कोई आसण || तोई जग जाणे नांही रे ||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,मेरे शरण मे आये हुये हंसोको तीन घंटे तो क्या पलभर मे ही मै काल के परेके गिगन मे दसवेद्वार से चढा देता हुँ । उन्हे खेचरी,भुचरी, आदि मुद्रा जोगाभ्यास की कुंची या किसी प्रकारका आसन नही करना पड्ता । आज तक ऐसे शरणमे आये हुये कई हंस गिगन मे चढ गये फिर भी मायामे रचे मचे जगतके ग्यानी ध्यानी नर नारी मेरे इस पराक्रम को पकड्ते नही ।

|| साख ||

पच पच मरे जोगेसर सारा || तोइ गढ चढयो न जावे रे ||
मो संग अनत सेज में चढ गया || तोइ इतबार न आवे रे ||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले कवी,हरी,प्रभुध्द,पिंपलायन आदि योगी पच पच कर मर गये लेकिन काल के परे के गिगन मे नही चढ पाये व मेरे संग सहजमे अनंत चढ गये तो भी ये ग्यानी ध्यानी जोगी मुझपे विश्वास नही करते ।

|| साख ||

पच पच चढे गिगन मे ऊँचा || सेज समाध न पावे ||
मो संग चढे जिकारे भाई || आठ पोहोर गरणावे ||

ये जोगी पच पच कर गिगन मे सदा रहने के लिये चढते परंतु वहाँ सदा नही रह सकते व

वहॉसे जीव चढाणेके पहले आदिमे जहां था ऐसे कंठकमल मे आ जाता । मेरे संग चढणेवाले हंस वहाँ सदा रहते वे निचे कभी नही आते । पच पच कर चढणेवाले योगीयो की समाधी टुट टुट जाती व मेरे संग चढणेवालो को सहजमे अखुट समाधी रहती । पच पचकर चढणेवाले योगीयोको जबतक वे गिगन मे रहते तब तक उन्हे ध्वनी रहती व निचे उतरतेही ध्वनी बंद हो जाती परन्तु मेरे संग चढणेवाले की ध्वनी रातदिन चोबीसो घंटा अखंडीत रहती ।

|| साख ||

सता समाध रात दिन लागी || मो संग चढिया ज्यॉरे रे ||
पवन खेंच पच पच चढिया || उतरत कुछ नहि बारा रे ||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की मेरे संग जो जो गिगन मे चढे उन्हे सता समाधी रातदिन लगी है । जो जोगी सांस खिच खिचकर पच पचकर गिगनमे चढे उन्हे रातदिन की सत्ता समाधी नही लगती । ऐसे योगी पच पचकर गिगनमे चढते व ध्यान टुटते ही पलमे ही निचे उतर जाते ।

|| साख ||

ग्यानी तके मांड मे सारा || कोई नही जीतन पावे रे ||
अेक साख मे सब कूं पकडुं || तोइ इतबार न आवे रे ||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की दुनियाके जबर से जबर त्रिगुणी मायाके ग्यानी ध्यानी मेरे साथ केवल के चर्चामे केवल के छोटेसे छोटे साख का अर्थ बतानेमे स्वयंम को असमर्थ कहते व मुझे वे अपने किसी ग्यानमे जित नही सकते मतलब मेरे केवल के एक ही साखमे मायाके सब ग्यानी ध्यानी अटककर पकडे जाते फिर भी मेरे पास कैवल्य की सत्ता है यह विश्वास नही करते ।

|| साख ||

मै तो भगत करूं उण पद की || तां कूं ईस न पायो रे ||
समझ बिनाँ कोई नहि माने || सुणिया इचरज आयो रे ||

महेश को भी प्राप्त हुआ नही ऐसे आनंदपद की भक्ति मै करता हुँ । आनंदपद की समज किसी ग्यानी ध्यानी नर-नारी को नही है । इसलिये वहॉका ग्यान सुणाने पे भी ये ग्यानी ध्यानी मानते नही व सुणाने पे मेरे ग्यान को कोई भ्रम समजते तो कोई ऐसा है ही नही समजते व कोई तो बडे आश्चर्य की बात है ऐसा समजते व इसे पाना हमारे बस का काम नही ऐसा सोचकर आनंदपद को त्याग देते ।

|| साख ||

मोख मोख केंता सब कोई || सो ओ मारग होई ||
सो प्रगट किया हम जुग में || निरख परख ल्यो सोई रे ||

सभी ग्यानी ध्यानी ग्यान मे मोक्ष मोक्ष कहते है । काल के परेका पद कहते है । ऐसा

काल के परेका मोक्ष कहते है । वह मोक्ष मै जो बता रहा हुँ वह है व उसे पानेका मार्ग मै जो बता रहा हुँ वह मार्ग है । जगतमे चारो युगोमे मैने यह मोक्ष का मार्ग प्रगट किया वह निरख लो परख लो व निरख परखकर धारण कर लो व चाहणा है तो सच्चा मोक्ष पा लो।

|| साख ||

अंध मुंध में मेहेमा करग्या || सतस्वरूप की सारा ||
गेल भेद पायाँ बिन बकिया || कोई नहि उतरे पारा रे ||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने कहा की अंध मुंध मे याने केवल की जारासी भी समज न रखते त्रिगुणी माया के आधार से सतस्वरुप की महीमा की याने अपनी माया से ही सतस्वरुप की समज बनाई । सतस्वरुप मे जानेका रास्ता याने विधी न जाणते उस माया के ग्यान समजसे सतस्वरुप पाने की जगत के सभी ग्यानी ध्यानी व नर नारीयोने कोशीश की लेकिन उनके सारे हट बेकाम रहे व कोईभी भवसागर से पार नही उतर सके।

|| साख ||

बांदा युँ जग मोहे ना जाणे ||
अगम देस का मै उपदेशी || ये माया रस माणे ||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजने हरजी भाटी से कहाँ की मै ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ती, त्रिगुणी माया,पारब्रम्ह तथा इन सभी के ग्यानी ध्यानी साधु संत जिस महासुख के अगम देश को जरासा भी जाणते नही ऐसे अगम देशका उपदेशी याने जाणकार हुँ व यहाँके ग्यानी ध्यानी नर नारी शब्द,स्पर्श,रुप,रस,गंध इस मायाके भोगी है इसलीये ये ग्यानी ध्यानी नर नारी मेरे अगम देश का उपदेश देणे पे भी अगम देशके महासुख को समजते नही ।

|| साख ||

बांदा केवळ भेद न्यारो जी । सतस्वरूप आणंद पद कहिये । सो उपदेश हमारो जी ||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज हरजी भाटी को कहते है की,अरे हरजी भाटी जो तु जगतमे ग्यान सुणके आया उससे मेरा केवलका ग्यान न्यारा है । मेरा ग्यान विषय वासनाके अतृप्त सुखसे न्यारा ऐसा सतस्वरुप आनंदपदके तृप्त सुखका है । मतलब जगत मे ग्यानी ध्यानी जो तीन लोकोके सुखोका उपदेश करते उसके परे के सतस्वरुप आनंदपदके सुखोका उपदेश है ।

|| साख ||

ब्रम्हा बिस्न महेस ना पायो || ना अवतारा सोई ||
सुर तेत्तीस सक्त इन्द्रादिक || नेक न जाण्यो कोई ||

मै जो कहता हुँ उस सतस्वरुपको ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,कृष्णादिक अवतार,तेहतीस कोटी देवता,देवताओका राजा इंद्र आदिको जरासा भी मिला नही ।

|| साख ||

ग्यानी ध्यानी संत साधरे ।। ना जोगेसर पावे ।।
दुनियाँ सकळ कोण गिणती में ।। सेंस ब्रम्ह लग धावे ।।

जगत के सभी ग्यानी,सभी ध्यानी,सभी संत,सभी साधु,सभी जोगेश्वर यहाँ तक की शेषनाग भी(होणकाल)पारब्रम्ह की ही साधना करता है । ये सभी पारब्रम्ह के परे के सतस्वरुप आनंदपद को जरासाभी नही जाणते है । फिर इनको पुजनेवाले नर नारी सतस्वरुप आनंदपद को जाणणे की गिणती मे कहाँ आते ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ।

।। साख ।।

बंध मुगत दोनु के आगे ।। मुगत रूप सुण होई ।।
इहाँ लग सकळ खबर ले आया ।। आगे न जाण्यो कोई ।।

इन त्रिगुणी मायाके ग्यानी ध्यानीयोने स्वर्गादिक की गतीको वैकुंठादिक के मुक्ती को जाणा है व कुछ ग्यानीयोने ज्यादा से जादा वैकुंठादिक के परे के पारब्रम्ह होणकाल के मुक्ती को पाया है । मतलब स्वर्ग,स्वर्ग के परे बैकुंठ,बैकुंठ के परे होणकाल पारब्रम्ह तक की खबर याने पोहोच इन ग्यानी ध्यानीयोने पाअी है परंतु होणकाल के परेकी सतस्वरुप आनंदपद की पोहोच जरासी भी नही जाणी है अैसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ।

।। साख ।।

आपो खोज समज सो कीजे ।। मै उण मे हुँ भाया ।।
आगे हंस तार जन लेगा ।। अब मै तारण आया ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी ग्यानीयोको कहते है की,आदि से आज दिनतक की खोज करो व जो जो संत आगे होणकाल पारब्रम्ह से हंस तारकर सतस्वरुप आनंदपदमे लेकर गये उन संतोके पास व मेरे पास मोक्षमे पहुँचाने की एक ही सत्ता है या नही यह खोजो अगर वही सत्ता है तो मै भी आगे जैसे संत तारणे आये थे वैसे मै भी अब हंस तारणेको जगत मे प्रगटा हुँ ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ।

।। साख ।।

दर्शण भेष जगत नर नारी ।। सब मुझ पासे आवो ।।
राव र रंक सकळ कुइ तारू ।। आ सत सरण समावो ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले की,जगत के सभी छःदर्शनी भेषधारी जोगी,साध सिध्द ,ग्यानी ध्यानी व सभी नर नारी सभी मेरे पास आवो व मेरा सत शरणा धारण करो । मै राव रहो या रंक रहो जो भी मेरा सत शरणा धारण करेंगे उन सभी राव रंक को भवसागर से तारकर सतस्वरुप आनंदपद ले जाऊँगा ।

।। साख ।।

चूको मती सत्त कर मानो ।। जे आणंद पद चावो ।।
डाकर पड़ो जगत कूं छाड़र ।। तो घट परचो पावो ।।

जगतके सभी दर्शणीयो, भेषधारीयो, जोगीयो, साधुओ सिध्दीयो, ग्यानी ध्यानीयो व सभी नर नारीयो यह मनुष्य देह का डाव चुको मत व आनंदपद की चाहणा है तो मै जो उपदेश दे रहा हुँ उसे सत्त मानकर जगतके सभी ग्यान ध्यान,पर्चे चमत्कार की विधीयाँ रिध्दी सिध्दीयाँ त्यागकर मेरे शरणा मे आवो व आनंदपद का पर्चा घटमे पाओ ।

|| साख ||

जो बिग्यान कहुँ मै तुम कूं || ताँकी समझ न माँई ||

जो सतस्वरुप विज्ञान मै तुम्हे बता रहा हुँ उसकी समज ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ती तथा सभी औतार आदियोके घटमे जरासी भी नही है ।

|| साख ||

अेतो सरब हमेसा भाई || कुळ उजियागर होई ||
हम कुळ छाड़ हुवा सतरूपी || रिध सिध रखू न कोई ||

ये ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ती तथा औतार होणकाल पारब्रम्ह पिता व इच्छा माता के उजागर याने भक्त है व मै पारब्रम्ह पिता तथा इच्छा माता के कुल को त्यागकर सतस्वरुप सतगुरु का भक्त बना । ये ब्रम्हा,विष्णु,महादेव तथा अवतार सभी पारब्रम्ह पिताकी सिध्दीयाँ तथा इच्छा माता की रिध्दीयाँ जगतमे पसारते परंतु मै पारब्रम्ह पिताकी सिध्दीयाँ व इच्छामाता की रिध्दीयाँ जरासी भी निकट नही रखता व कालसे मुक्त करा देणेवाला सतस्वरुप सतगुरु का घटपर्चा पुर्ण जगतमे पसारता ।

|| साख ||

गुरू तो पदी हमारी कहिये || वे कुळ राजा होई ||
बिनाँ भेद कोई मोहे ना जाणे || ग्यानी पिंडत लोई ||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,आदि सतस्वरुप यह होणकाळ पारब्रम्ह, इच्छामाता व सभी आत्माओका राजा है । इस सतस्वरुप की सत्ता मुझमे प्रगट हुअी है । इसलीये मै जैसे सतस्वरुप यह सभी का गुरु हुँ । जैसे मुझे सतस्वरुप की सत्ता प्रगट हुअी वैसे ब्रम्हा,विष्णु,महादेव मे पारब्रम्ह राजा की सत्ता प्रगट हुअी । इसलीये ब्रम्हा,विष्णु,महादेव ये गुरु नही है ये राजा है । गुरु जैसे मोक्ष विधी दे सकता वह विधी राजा जगतके नर–नारीयोको नही दे सकता । ब्रम्हा,विष्णु,महादेव ये जब गुरु नही है राजा है तो उनके साधु सिध्द ऋुषी मुनी ये सभी गुरु नही है,राजा है । जगत के ग्यानी पंड्ति साधु सिध्द ऋुषी मुनी ये गुरु नही है ये राजा है यह भेद नही जाणते इसलिये ब्रम्हा,विष्णु,महादेव के साधु सिध्दीयो को गुरु मानकर मोक्ष की चाहणा रखते व इनके शरण जाते । इसप्रकार गुरु कौन व कुल का राजा कौन यह फरक जगत के ग्यानी पंड्तिोको मालुम नही इसलीये जगत के ग्यानी पंड्ति मै गुरु हुँ व ब्रम्हा विष्णु महादेव के साधु गुरु नही है राजा है यह अंतर नही जाणते इसलीये ये ग्यानी पंड्ति मेरे शरण नही आते व मोक्षसे दुर रह जाते ।

|| साख ||

मै गुरूदेव शिष्ट सब ही का || जानमा जाणो कोई ||
मो सूं मिल्या अगम घर मेलूं || अणंद पद मे सोई ||

सतस्वरुप आदिसे सभी सृष्टी का गुरु है वही सतस्वरुप मुझमे प्रगट हुवा है इसलीये जैसा सतस्वरुप सभी का गुरु है ऐसे ही मै भी सभीका गुरु हुँ मै सभी का गुरु हुँ यह आप जाणो या मत जाणो मतलब जैसे सतस्वरुप सभी का गुरु है व गुरु रहेगा ऐसा मै भी सभी का गुरु हु व गुरु रहुँगा । मेरे शरण आनेसे शरण आनेवाले को मै दु:खभरे काल के घर से निकालकर महासुख भरे अगम घर याने आनंदपद मे पहुँचा दुंगा ।

|| साख ||

मेरो अंग आद से ओई || जिऊँ जग ग्यान कहावे ||
सत लोक कूं हंस पठाऊँ || जिऊँ दुख ग्यान न मावे ||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की मेरा स्वभाव आदि से हंसोको माया के लोक से निकालकर सतलोक मे पठाणेका है ।

|| साख ||

मेरो किसब कळा सो आई || रीज मोज धन माया ||
सत लोक मे हंस पठाऊँ || ओ बी बिडद ले मैं आया ||

मैने मेरे शरण आनेवाले हंसोको महासुख के सतलोक मे भेजनेका बिड्द लाया हुँ । इसलीये जैसे राजा के शरण जानेवाले को राजा खुश होने पे खुशी मे धन के रुपमे राज यह माया देता वैसे मेरे शरण आने पे मै भी खुश होता व मै हंस को धन के रुपमे अखंड्ति सुख मिलनेवाला सतलोक यह राज देता ।

|| साख ||

ग्यानी बुध्द माहि घट लावो || सत्त स्वरूप ज्याँ ||
मै सत्तगुरू हुँ || तुम ओ भेद न पावो ||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी ग्यानीयोको कहते है की अरे ग्यानीयो सतस्वरुप ग्यान बुध्दी घटमे लावो । जब तक ग्यान बुध्दी घटमे नही लाओंगे तब तक मै हंसोको सतस्वरुप देश को पठाणेका सतगुरु हुँ यह तुम्हे भेद नही समजेगा ।

|| साख ||

गुरू तो पदी हमारी आदू || सुण ग्यानी कहुँ तोई ||
भोळा जीव भेष सूं डरपे || यूँ नहि माने मोई ||

सतस्वरुप यह आदिसे सभी सृष्टी का गुरु है वह सतस्वरुप मुझमे प्रगट है इसलीये गुरु तो पदवी आदि से हमारी है यह सभी ग्यानीयो सुनो । जगत के जीवोको सतस्वरुप ग्यान बुध्दी नही है इसकारण ये जगतके भोले जीव घट मे प्रगट हुअे सतस्वरुप भेष को समजते नही । व भर्मा भर्मी सुणे हुअे छ्ट दर्शणी भेषीयोको मोक्ष देणेवाले साधु समजकर मोक्ष पानेके लिये उनके आधीन बनते । इन भेषधारी साधुओका कोप नही होवे इसलीये

जगतके ग्यानी नर–नारी उनसे डरते रहते व मै सहज मे मोक्ष दे सकता हुँ परंतु मुझे नही मानते ।

|| साख ||

ब्रम्ह लग इन की बुध्द नाही || जे मो कूं क्या जाणे ||
पूरण ब्रम्ह आप ही तिल भरमों कूं नाँहि पिछाणे ||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,पुरणब्रम्ह याने होणकाल पारब्रम्ह यह भी मुझे जरासा भी जाणता नही व जगत के ग्यानीयोकी बुध्दी तो पारब्रम्ह(होणकाल)तक की भी जाणणे की नही है फिर ये ग्यानी होणकाल पारब्रम्ह परेके सतस्वरुप को कैसे जोणेंगे? इसलीये ये ग्यानी मै सतस्वरुप ग्यानी हुँ यह नही समजते ।

|| अथ तुळछाजी की बिगत लिखंते ||

|| साखी ||

तुलछीदास जाय कर || कही लाल कू बात ||
सुण हगीगत लालदास || दिया कान पर हात ||

|| साखी ||

हरकिशन उपाध्ये तुज कूं || कही काळ की बात ||
म्हारे कने राम चौकी || तूं आजे उण हि रात ||

|| साखी ||

म्हारे कडाई कार में || निसंक बेठ जा मॉय ||
कोई आवे कुछ हुवे || तोइ कार लोपणी नॉय ||

महाराज के भाई तुळछाजी के हरि किसनजी जो महाराज के मामा का बेटा जो बडे पंडित थे उन्होंने(न जाणे जन्मपत्री देखकर कहा या न जाणे हस्त रेखा देखकर कहा)तुळछाजी से कहा किसी को मौत के बारेसे कहना तो नही चाहीये पर कहे बिना कुछ ठीक नही लगता कारण बताने से आदमी अपनी होशियारी मे आ जाता है । आगे उसे क्या करना है इसका उपाय ढुंढ लेता इस वजहसे आपसे मै कह रहा हुँ । तुम्हारा मिती..... वार को रात को सव्वा पोहोर गुजरने के बाद काल आनेवाला है । यह बात सुनकर तुळछाजी घबरा गये और उनके गुरु लालदासजी के पास मेलाणे गाँव जा कर यह बात बताई की मेरा फलाणे मिती,फलाणे दिन रात को काल आयेगा ऐसी हरिकिशन जी ने कही बात चुकेगी नही जिनका उपाय करो तब लालदास जी ने कान पर हाथ रखकर कहा काल तो किसी से भी टलता नही वैसे मुझसे भी टलता नही । तब तुळछाजी सतगुरु सुखरामजी महाराज के पास आकर रोकर यह बात कहने लगे की अब मै क्या करु तब सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले क्या हुवा? तब तुळछाजी कहने लगे मेरा काल आ गया है । अब कोई तिरथ जाये जाता नही । आप कहे तो पुष्कर जी जाता आप कहोंगे वैसे करुंगा । तब सतगुरु सुखरामजी महाराज ने तुळछाजी से कहाँ हरि किशनजी उपाध्ये ने जीस

रात तुझे काल लेने आनेवाला है उस रात तुम मेरे पास रामचौकी आ जाना । उस रात तुळछाजी सतगुरु सुखरामजी महाराज के पास रामचौकी आ गये । तब सतगुरु सुखरामजी महाराज ने कार(गोल रिंगण)निकालकर उस कार मे तुळछाजी को बैठने के लिये कह दिया और बोले कोई भी आया तो कार के बाहर मत निकलना ऐसा कहकर महाराज ध्यान मे बैठ गये । इधर पिछे से एक ऐसी बात हुयी की काल आया लेकिन कार मे बैठे हुये तुळछाजी पर उसका जोर कुछ चला नही । तुळछाजी को कारके बाहर निकालने के लिये काल ने साँप का रुप धारण किया । कालिंदर साँप का रुप बनाकर काल तुळछाजी के पास आया लेकिन तुळछाजी कार के बाहर निकले ही नही जिस वजह से उनपर काल का जोर चला नही । कालींदर साँप ने उसका फणा जोर से पटका जोर जोर से फुत्कार किया फिर भी तुळछाजी कार के बाहर निकले नही । तब फिर बाद मे काल ने गोइडा का रुप धारण किया और कार के बाहर तुळछाजी को निकालने के लिये फुँका मारने लगा फिर भी तुळछाजी कार के बाहर निकले नही यदि वे कार के बाहर निकल जाते तो गोइडा का जोर उनपर लग जाता । तिसरी बार पितांबर सिंह का रुप धारण करके आया । लेकीन कार के अंदर बैठे हुये तुळछाजी पर उसका जोर लगा नही । उसने कार के बाहर से तो बहोत डराया पर तुळछाजी कार के बाहर निकले ही नही तब काल गाँव के ठाकुर तेजसिंगजी का रुप धारण करके आया और जोर जोर से पुकारने लगा तब तुळछाजी बोले मै कार के बाहर नही आऊँगा ठाकुर रुप मे आये हुअे काल ने बहोत देर तक तंटा की और कहा जब गाँव मे आओंगे तब तरी खबर लुँगा मेरा कहाँ तु मानता नही इसलीये उसका मजा तो मै तुझे अच्छी तरह चखाऊँगा अभी भी तुम मेरी बात मान ले । फिर भी तुलसाजी कार के बाहर नही निकले । तब काल तुळछाजीके गुरु लालदास जी का रुप धारण करके प्रसाद लेकर आया और बोला तुळछाजी तेरा आज अंतकाल है सो तुझे प्रसाद देने आया हुँ । गुरु के हाथ से प्रसाद अंतिम समय मे यदि जीव को मिल जाता है तो उस जिव का भला हो जाता है तो तुम प्रसाद लो । परंतु तुलसाजी फिर भी कार के बाहर निकले ही नही । तब काल फिरसे माथेपर मुकुट चार भुजा धारण करके शंख,चक्र,गदा पद्म हाथ मे धारण करके पितांबर पहना हुवा गले मे बैजंती की माला पहनकर विष्णुरुप धारण करके आया और बोला तुळछाजी तुम हमारे बैकुंठ मे चलो हम खुद तुम्हे जात से ले जाने आये । परंतु फिर भी तुळछाजी कार के बाहर नही निकले । तब विष्णु के रुप मे आया हुवा काल तुळछाजी से बोला तुम हमारे साथ तो नही चल रहे आखिर मे तुम्हे जमराज आकर ले जायेगा तब तो तुम जाओगे ही । जाओगे तब जमसे क्या कहोगे । इतना कहकर करोड भुजा धारण करके परचा दीया और वही के वही लुप्त हो गया । पिछेसे काल यम का रुप धारण करके भैंसे पर बैठ कर हाथ मे फाँसी का फंदा लेकर आया और तुळछाजी को बहोत डराने लगा तब तुलसाजी ने कहा तु कितने ही

प्रयास करले मै काल के बाहर निकलुँगा नही और कार से बाहर आये बिना तेरा मुझपर जोर चलेगा नही । इधर सतगुरु सुखरामजी महाराज समाधी मे सतस्वरुप ब्रम्हदेशमे जाकर आज तुळछाजी को नही लाना ऐसा सतस्वरुप ब्रम्ह के पाससे काल पर हुकुम लगवा दिया । सतस्वरुप पारब्रम्हके और महाराजके बिच आगे लिखे मुताबीक बात हुयी वह बात खुद महाराजने कही है ।

|| साखी ||

हम सूं साहिब यूँ कहयो || मरत लोक मे जाय ||
काळ मार सुखराम के || लीज्यो हंस छुड़ाय ||१||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज समाधीमे साहेबके देश मे गये और साहेब से आज तुलसाजी को नही लाना यह काल पर हुकुम लगवाया तब साहेब ने आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज को कहा की तुम इस समाधी के देश मे न रहते मृत्युलोक मे जावो और काल को मारकर हंसो को काल से छुडावो ।।।१।।

जब हम हर सूं या कही || काळ कहो कुण होय ||
काहा उतपत सुखराम के || कर किरपा कोहो मोय ||२||

गुरु महाराज ने हर से पूछा यह काल कौन है?उसकी उत्पत्ती कहाँ से है?यह मुझे बतावो । ।।२।।

करता पुरूष बणावियो || हम अंछया कर जोय ||
सुख देव सुक्रत काळ रे || दोनु प्रगट होय ||३||

तब साहेबने बताया की मै और इच्छाने मिलकर करता पुरुष को बनाया । उससे मेरे देश आने के सुकृत और काल याने काल के देश पहुँचानेवाले कुकर्म ऐसे दोनो एक साथ प्रगट हुये । जैसे सतस्वरुप और ब्रम्ह परापरी से दोनो एक प्रगटे है साथ है,जैसे अंधेरा उजाला एक साथ जन्मते,गरीबी अमीरी एक साथ जन्मती वैसे सुकृत याने साहेब के देश पहुँचानेवाले कर्म और कुकर्म याने काल के देश पहुँचानेवाले कर्म एकसाथ प्रगट होते वैसे सुकृत और काल एकसाथ प्रगट हुये । सुकृत याने साहेब का ज्ञान ध्यान ये कर्म करने से साहेब प्रगटता तो कुकर्म याने विषय विकार तथा माया के ज्ञान ध्यान ये कर्म करने से काल प्रगटता ।।।३।।

जब हम हर सूं आ कही || किस बिध मार्‍यो जाय ||
काळ तुमारो पोतरो || तम हम उण सब माँय ||४||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने हर से पुछा कि काल यह तुमारा पोता है और पोता होने के नाते हम सभी उसीके सत्ता मे है ऐसे पोते को कैसे मारा जायेगा ? ।।४।।

साहेब के हम सूं भया || परगट पुरूष पच्चास ||
ज्याँ मे अमर अेक हे || सो जद तद मम पास ||५||

साहेब ने आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज को कहाँ की प्रगट पुरुष पचास है । उसमे अमर एक है वह अमर पुरुष आदि से अंततक मै मेरे पास ही रखता ।।।५।।

सगत अेक इगतीस हे ।। फिर बीस दस दोय ।।
ज्याँ में अमर अेक हे ।। कह सुखदेवजी जोय ।।६।।

सक्ती एक एकतीस फिर बीस दस दोय है । जिसमे अमर एक है ऐसा साहेब आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज को बता रहे है ।।।६।।

साहेब के सुखराम कूं ।। मो बिन सब बर जाय ।।
दोय पुरूष नर नार अे ।। जद तद मॉय समाय ।।७।।

साहेब कहते है कि दोय पुरुष नर नार(र म)ये मुझमे समाते है और अन्य सभी मुझमे न समाते काल के ग्रास बनते है ।।।७।।

तम जावो उण लोक मे ।। डर मत राखो कोय ।।
काळ करम साहेब कहे ।। सेजा सब बस होय ।।८।।

इसलिये तुम मृत्युलोक मे जावो,काल का किसी प्रकार का डर मत रखो ये सभी काल कर्म सहज मे ही तुम्हारे वश हो जायेंगे ।।।८।।

अणभे फौजाँ संग लहो ।। दस जोधा लो साथ ।।
अर फिर जावो उण लोक में ।। सुण सुखदेव जन बात ।।९।।

तुम तुमारे साथ अणभै फौजा याने अणभै देश का ज्ञान और दस योध्दा साथ रखो ।(दस योध्दा–ज्ञान,शिल,सांच,संतोष,समता,प्रेमप्रित,भाव,जरणा,बिरह,वैराग्य इसप्रकार के)(मन की राळ)और फिर काल मारने के कार्य को मृत्युलोक मे लगो । ऐसा साहेब ने आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज को कहा ।।।९।।

जन सुखदेव तब बोलिया ।। सुण हर बेण हमार ।।
काळ उलट मो कूं गहे ।। तो किम लासुं मार ।।१०।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने साहेब से कहाँ की काल ही हमे खाँ लेगा तो हम उसे कैसे मारेंगे ? और कैसे हंस छुडायेंगे ? ।।१०।।

हंस गया सो बस गया ।। अेसो बळ हे माँय ।।
मै किण बळ सूं सुखराम के ।। हंस छुडाऊँ जाय ।।११।।

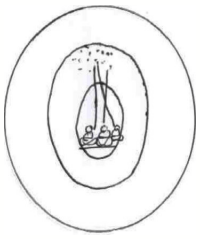

जो हंस आपको छोड्कर माया मे बस गये वे अब काल के देश के हो गये वे अब निकलना नामुमकीन है । मै किस बल से हंसो को काल के मुख से छुडावू ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने साहेब से पुछा ।।।११।।

साहेब के सुखराम कूं ।। काळ मरे जिण रीत ।।
मै तुम मे गुण मेल सूं ।। तम हंस लासो जीत ।।१२।।

तो साहेब ने आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज को कहाँ की काल जिस विधी से मरता है

वह गुण मै तुममे प्रगट करा दुँगा जिससे तुम हंसो को काल से जितकर सहज छुडा लोंगे ।।।१२।।

दोय बसत अेसी धरूं ।। सुण हर के जन तुज मॉय ।।
काळ करम अे उलट के ।। पाँव पडेंगे आय ।।१३।।

साहेबने आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज को कहा की,मै ऐसी दो वस्तु तुझमे प्रगट करा दुंगा की काल और कर्म ये हंसो को तो नही पकडेंगे उलटे तेरे बल को देखकर पाव पडेंगे । ।।१३।।

साहेब मोकूं भेजियो ।। कल बल दे सब ग्यान ।।
माया बीचे लड़ पड़ी ।। मत धर मेरा ध्यान ।।१४।।

साहेब ने काल और कर्म मारके और हंस छुडाने की कला,बल और सभी ज्ञान मुझे देकर हंस कालसे छुडाने को भेजा । इस भितर मुझसे माया मेरा ध्यान मत कर करके लढ पडी ।।।१४।।

मै आया अे लोक मे ।। जम की पड़ रही हुल ।।
हंस पलट सो काग हुवा ।। गया पुरूष सो भूल ।।१५।।

मै साहेब के देश भेजने के लिये हंसो को खोजने लगा तब सभी हंस पलटकर काग हो गये, साहेब पुरुष को भूल गये और जमके वंश हो गये ऐसा तीनो लोकोमे सभी ओर दिखा ।।।१५।।

जम हम सो रोळो किया ।। लड़ियो बोहो बिध आय ।।
सुखराम शबद के जोर सूं ।। पकड लियो छिन माँय ।।१६।।

जब मै जम से हंसो को छुडाने गया तो जमने हमसे विवाद किया और अनेक प्रकार से लढाई की । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजने कहा की मैने अणभै शब्द के जोरसे उसे पल मे पकड लिया ।।।१६।।

काळ जाळ सो मांडियो ।। पासा पास्याँ जोड़ ।।
सुखराम लोक तीनुं बंध्या ।। कोय न सक्के तोड़ ।।१७।।

काल ने हंसो को अटके रहने के लिये अनेक जाल मांडे है और अनेक प्रकार की फांसीयों पे फाँसीयाँ लगाई है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कह रहे की तीनो लोक के सभी हंस जाल मे अटके गये है,फाँसीयों में जखडे गये है कोई भी जाल से निकल नही पा रहे और कोई भी फाँसी तोड नही पा रहें ।।।१७।।

सुखराम काळ बोहो हिकमती ।। छल बल मॉय अनेक ।।
सोखी हुय कर बस करे ।। दोखी होय कर देख ।।१८।।

जिसे हम होणकाळ कहते याने समयसे सृष्टी निर्मीती करता इसलीये इश्वर है । व समयसे सृष्टी नाश करता इसलीये काल है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है

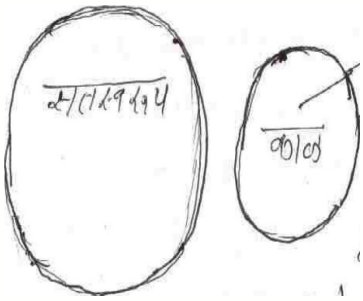

काळ यह सुख देता यह कैसे? काळ दु:ख देता यह कैसे?– हंस के साथ मन व पाच आत्मा है । मन व पाच आत्माओको जो सुख चाहिये वे सुख त्रिगुणी माया के द्वारा हंस को देता । हंस को लगता की ये सुख त्रिगुणी माया ने दिया । त्रिगुणी माया अचेतन हैं जैसे देह मे प्राण है तो देह चेतन है देह से प्राण निकल गया तो देह अचेतन याने मुर्दा होता । जब देह चेतन है तब तक देह जगतके लेने देने के काम कर सकता परंतु देह अचेतन होते ही वह देह स्वयंम के या जगत का एक भी काम नही कर सकता मतलब जबतक उस देह मे चेतन आत्मा है तबतक वह मायारुपी देह सभी काम कर सकती वह चेतन आत्मा देहसे निकल जाते ही वह माया रुपी देह चेतन देह के सरीखा एक भी काम नही कर सकती इसीप्रकार रजोगुणी,सतोगुणी,तमोगुणी इस त्रिगुणी माया मे चेतन पारब्रम्ह काल है । जबतक त्रिगुणी माया मे चेतन पारब्रम्ह काल है तबतक त्रिगुणी माया जगत का काम,सुख दु:ख देनेका काम कर सकती । चेतन रुपी पारब्रम्ह काळ इस त्रिगुणी माया से निकल जाता तब यह माया जगत का एक भी काम सार नही सकती । महाप्रलय मे ऐसा होता । महाप्रलय मे यह त्रिगुणी माया का प्रलय हो जाता । फिर से जब यह सृष्टी बनती तब वह माया फिर से जिवीत होती । जैसे जिवीत देह जगत के काम सारता तब जगत को देह ग्यानदृष्टीसे समजता की देह इस साधन से आत्मा काम कर रही है । ऐसे ग्यान दृष्टीसे हर हंस ने यह समजना चाहिये की त्रिगुणी माया सुख दु:ख का काम करती तो यह समजो की,वह त्रिगुणी माया पारब्रम्ह काळ इस चेतन के आधार से करती ।

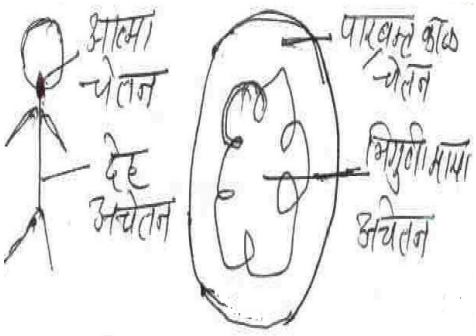

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की काल बहोत हिकमती है कालमे अनेक बलशाली कपट है । जिव को त्रिगुणी मायाके सुख मिले तो जिव उन सुखो मे अटककर उन सुखोमे मनुष्य देह लगा देगा । मनुष्य देहसे काल का देश छुट सकता परंतु यह मौका इन सुखोमे अटक जानेसे हंस अपना मनुष्य देह गमा देगा । इसलीये यह काल कपट से त्रिगुणी माया के द्वारा जीवके मन व पाच आत्माको भानेवाले त्रिगुणी मायाके सुखोसे सुख देते रहता । जिव यह समज नही सकता की इन मायावी सुखोमे उसे ग्रासणेवाला काळ बैठा है । जिव तो यही समजता की ये सुख मुझे त्रिगुणी मायाके ब्रम्हा,विष्णु,महादेव तथा उनके समान देवताओ ने दिया । वह जिव इन सुखोमे लिन हो जाता,गर्क हो जाता व अपने ७७,७६,००००० साँस गमाकर हिरा सरीसा मनुष्य देह गमा देता । इस प्रकार से काल जीव के साथ कपट खेलकर जीव को आवागमन के महादु:ख भरे चक्कर मे फसा रखता । काल दु:ख देकर भी जीवोको आवागमनके चक्करमे फसाता

यह कैसे–जिव मायावी जगत मे है । जिवोको सुखोकी चाहणा है । यह काल किसी जीव को सुख देता व किसी जिव को दु:ख देता । जिव पे दु:ख पड्नेसे जिव सुख के लिये तरसता । जगतके सुखी जिवोको देखकर दु:ख भोगनेवाला जीव,सुख भोगनेवाले जीव क्या उपाय करते यह उपाय जगत मे ग्यानी ध्यानी नर नारीयोसे खोजता । ये ग्यानी ध्यानी त्रिगुणी मायाके दुत रहते याने काल के दुत रहते । वे ग्यानी ध्यानी ब्रम्हा,विष्णु, महादेव वेद शास्त्र पुराण आदि त्रिगुणी माया के उपाय बताते । जीव दु:खोके कारण चतुरहीन बनता व वह जिव ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ती आदि के वश होकर सुख पाने के लिये अनेक कर्मकांड करता । कर्मकांड मे काल है यह नही समजता व अपने ७७,७६,००००० साँस ब्रम्हा,विष्णु,महादेव से सदाके लिये तृप्त सुख मिलेंगे व दु:ख सदाके लिये मीट जायेंगे ये भ्रम मे गमा देता व ८४००००० योनी के ४३,२०,००० सालके दु:ख के चक्कर मे पड जाता । ऐसा यह काळ हिकमती है ।।।१८।।

काळ ग्यान कूं कथ रयो ।। काळ धन मे लीन ।।
सुखराम काळ में छळ घणा ।। कोय न सक्के चीन ।।१९।।

जिवो को सुख चाहिये रहता व दु:ख मे जरासाभी पडे रहना नही चाहता व काल को जिव को आवागमनसे मुक्त नही होने देना रहता इसलिये काल मायावी गुरु,साधुके रुपमे चार वेद पुराण का ग्यान कथता । जिवो को मृगजल समान झुठे मायावी सुख बता बता कर आवागमन के फासे मे अटका देता । कर्म कांडो के द्वारा मतलब त्रिगुणी माया के द्वारा काल धन देता जिस धनसे जिव को त्रिगुणी माया मे अटकने की कर्मकांड वासनाओकी बुध्दी सुचती । जिव उस धन को कमानेमे,धन संभालने मे,कुबुध्दीयोसे धन का उपयोग लाने मे लिन हो जाता । विषय वासनाओमे अपना मनुष्य देह जमा देता व कालके पिंजरे मे अटक जाता । इस प्रकार काल अनेक प्रकार के छ्ल कपट है । उसके छ्ल कपट जगत के ग्यानी ध्यानी नर–नारी कोई भी समज नही सकते ।।।१९।।

काळ उलट मेमा करे ।। काळ सिध्द होय जाय ।।
सुखराम काळ हुये गरिब रे ।। घर मे पैसे आय ।।२०।।

त्रिगुणी माया मे काल है । जीन जीन माया मे जिव अटक सकते ऐसे मायाकी दुजी माया महीमा करती । मतलब माया ही माया की महीमा करती माया मे काल है मतलब काल ही माया की महिमा करता व जिव माया मे अटकते ही काल उन जिवोको पकड लेता । जैसे जगत मे अनेक मायावी ग्यान देनेवाले प्रगट होते । उन मायावी ग्यान मे मोक्ष है सुख है ऐसा जगतको दिखलाया जाता । उनके मायावी ग्यान से सुखोके पर्चे काल डालता जिससे किसी किसीको सुख मिल जाते । जिवकी सुखकी चाहणा पुरी होती फिर जीव उनकी महीमा करता । इसप्रकार अटकाने के लिये काल ही सुख देता व नये जिव अटके इसलीये काल सुख पाये उन हंसोके द्वारा उस मायाकी महिमा करता । ऐसा मायाके सुख

देकर काल जिव को दबोच देता । रिध्दी सिध्दीमे मन ५ आत्माके सुख देनेके पर्चे है । मायाके सुख मिले की जिव सच्चा मोक्षका रास्ता भुल जाता । मायाके संतको माया परचे देनेवाला सिध्द पुरुष बना देती । भक्त सिध्द बन जानेसे जगतमे मायाके पर्चे देता । जिससे जगतके नर–नारी को पर्चो से सुख मिल जाते । इसलिये सिध्द की शोभा होती । शोभा सुण सुणकर सिध्द सुख पाता ऐसा सिध्द कालके जबडेमे अटक जाता व पर्चोके सुख मिलते इसलीये सुखके जरुरत से अन्य जीव पर्चे चमत्कारमे फस जाते । गरीब स्वभाव यह जद तद मोक्ष मिलनेका उच्च रास्ता है । मगरुरी यह मोक्षको दुर करनेका निच स्वभाव है । इसलीये मोक्ष चाहणेवाला अपनी मगरुरी खतम होकर गरीब स्वभावकी चाहणा करता है । ऐसे जीवमे यह काल त्रिगुणी मायाके आधारसे मगरुरी स्वभावके जगह गरीब स्वभाव प्रगट करता यह गरीब स्वभाव मोक्षके संतोके इसलीये यह गरीब स्वभाव ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ती आदि त्रिगुणी मायामे लीव लगाता । वे हंस त्रिगुणी मायामे भ्रमित होकर अपना अमुल्य मनुष्य देह गमा देते ।।।२०।।

काळ अंग गुरू को धरे ।। काळ सिष हुवे आय ।।
सुखराम काळ परचा देहे ।। द्रब दिखावे लाय ।।२१।।

काल के जबडे मे जिव को पकडे रखना इसलीये काल ने ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ती आदि

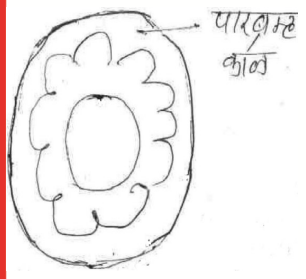

बनाये । इन का ग्यान देकर कर्मकांड मे रखनेवाले गुरु त्रिगुणी माया बनाते रहती । माया इन गुरु मे जिवो को भ्रम मे डालकर पर्चे चमत्कारोमे अटकानेवाला ग्यान प्रकट करती । माया मे काल है । इसप्रकार काल गुरु अंग धारण करता व जिव को गुरु के रुपमे काल पकडता । पारब्रम्ह काल यह हंस के मन मे व ५ आत्मा मे आदिसे प्रगट रहता । यह काल हंस को मन व ५ आत्माके द्वारा निच प्रकृती के सुखोके लिये बली लेनेवाले देवताओके गुरु का शिष्य बनाता व बली लेनेवाले देवताओ को निरअपराधी प्राणीयोके बली देता । ऐसे ऐसे बडे पाप करके जिव काल ने बनाये हुये अति दु:ख के नरक मे जा पडता ऐसा यह काल छली कपटी है व हंस के मन व आत्मा के उरसे ही कपट खेलकर जिव को अपने मुख मे रख देता ।।।२१।।

काळ क्रोड़ भुज धर लेहे ।। काळ तन दे भेट ।।
काळ बाज सुखराम के ।। धरे अगम की भेद ।।२२।।

विष्णु सरीखे देवता करोड भुजा धारण करते है । वह भक्त को दर्शन देते है । विष्णुमे सतोगुण माया है उस सतोगुण माया मे पारब्रम्ह काल रचमच के है वह काल विष्णु के रुप से भक्त को करोड भुजा का परचा देता है जिससे जगत उस देवता की मायावी भक्ती मे अटक जाता है व अपना अमुल्य देह गमा देता है । कोई मनुष्य आत्महत्या करते है । जीव को क्रोध आता है । क्रोध मे काळ है । वह क्रोध इतना नियंत्रण के परे निकल जाता

की वह जिव जीन्दा रहने से देह मीटा देना पसंत करता है । इसप्रकार काळ शरीर मिटा देता है । जिव को कालरुपी चेतन माया पिछम के रास्ते से अगम(अगम याने सतस्वरुप अगम नही होणकाल अगम)मे मिलाती है । चेतन माया मे काल बैठा है रचमच है । मतलब काल ही जीव को पिछम के रास्तेसे अगम के देश चढाता ।।।२२।।

काळ मन की सब कहे ।। काळ अन्न नही खाय ।।
सुखराम त्रास देखाय के ।। जीव पकड ले आय ।।२३।।

काल मन पर्चेके विद्याद्वारा जगत जगत के लोगोको मन मे क्या चाहणा है यह सब कहता है । गैर के मनमे क्या चाहणा है यह मन पर्चेवाला बताता है तो इस जिव को आश्चर्य होता व जिव को मन पर्चेवाले साधु पे विश्वास होता व कैवल्यभक्ती को न खोजते माया के भक्ती मे रचमच जाता व अपना मनुष्य देह गमा देता । कुछ लोग माया के ग्यान का अंतीम समय मे मोह नही रहना याने मोक्ष होगा इसलीये मोह निर्माण होणेवाली वस्तु त्यागते है । अन्न खाणेपे शरीरमे बल आता तो मोह रहेगा ऐसे अलग अलग समज से अंतीम समय मे कअी दिनोसे भोजन त्यागते व शरीर को तकलीफ दे दे कर अपना अंतीम दिन लाते । इनका मोक्ष नही होता उलटा भास लेकर शरीरसे प्राण निकलता व यम उसको पकड ले जाता ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते ।।।२३।।

अेक पुरूष के भेद कूं ।। काळ न जाणे कोय ।।
ओर सकळ सुखराम के ।। सब बिध हाजर होय ।।२४।।

काल सिर्फ एक सतसाहेब पुरुष के भेद को नही जानता है । बाकी अन्य सभी को जाल मे पकडने के लिये अनेक विधी से हाजिर करता है ।।।२४।।

इखर शब्द पर ब्रम्ह को ।। भेद दियो मै आण ।।
सुखराम काळ जब सरड के ।। रहयो करारी ताण ।।२५।।

इखर शब्द याने सतशब्द परब्रम्हका भेद मैने जब उसे बताया तो वह झगडने के उद्देशसे तेडा और करडा बनकर ताणणे लगा ।।।२५।।

अेक फेर सत शब्द की ।। नेक सुणाई रेस ।।
सुखराम काळ सुण सरवणा ।। रहयो मून गेहे बेस ।।२६।।

आगे फिर सतशब्द के सत्ता का न्यारा न्यारा पराक्रम उसे सुनाया तो आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की सतशब्द का ज्ञान सुनकर वह मौन रखकर बैठ गया ।।।२६।।

जब हम फेर संभाळ के ।। कहयो नाँव को नॉव ।।
काळ बक्यो सुखराम के ।। कियो जेर सब गाँव ।।२७।।

जब मैने फिर बिचार कर नामके नामका याने सतशब्द नाम का पराक्रम सुनाया तो काल ने सभी गाँव को जेर किया करके अपना पराक्रम आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज को

कहा । ।।२७।।

जब हम हरप सुणाविया ।। दरगा का सुण ल्याय ।।
काळ धूज सुखराम के ।। रोवण बेठो जाय ।।२८।।

जैसे जैसे दरगा के सतशब्द के पराक्रम के शब्द सुनाये वैसे वैसे काल धुजने लगा और रोने बैठ गया ।।।२८।।

काळ कहे करतार हुँ ।। मो बळ अवर न कोय ।।
किऊँ झूठी तम कह रहया ।। कहाँ सत्त साहेब होय ।।२९।।

काल (०मन+५ आत्मा) का हंस के ब्रम्हतत्वमे जरासाभी अंश नही है । हंस के मन ५ आत्मा व त्रिगुणी माया मे आदि से ओत प्रोत है व सतस्वरुप यह हंसके ब्रम्हतत्व मे भी ओत प्रोत है व हंसके ५ आत्मा व मन इन माया तत्वमे भी ओतप्रोत है तथा सतस्वरुप त्रिगुणी माया व पारब्रम्ह मे भी ओतप्रोत है । इसप्रकार सतस्वरुप सभी जीवब्रम्ह पारब्रम्ह काल मन व पाच आत्मा त्रिगुणी माया मे अखंडित है व काल जिवब्रम्ह मे नही है सिर्फ जीव के मन ५ आत्मा व त्रिगुणी माया के तत्व मे है फिर भी काल यही समजता कि मै सभी मे हुँ मेरे सिवा और दुजा कोई नही है जो सभीमे है ।।।२९।।

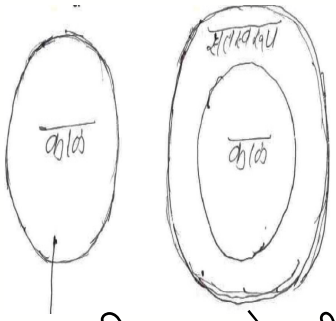

नबी अला सत्त राम रे ।। साहेब पुरूष कहाय ।।
अे सब मेरा नाँव हे ।। क्यूँ तुं भूलो जाय ।।३०।।

इसलीये मै ही जगतका नबी हुँ,मै ही अल्लाह हुँ,मै ही सतराम हुँ,मै ही साहेब हुँ मै ही एक पुरुष हुँ याने जगत नबी,अल्लाह,सतराम,साहेब एक पुरुष कहते है वह मै ही हुँ मेरे ही नाम है इसलीये मेरे अलावा और कोई पुरुष है इसमे तु भुले मत जा ऐसा काल ने आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज को कहा ।।।३०।।

रसणा बोले बेण रे ।। सरवण सुण ले कोय ।।
काळ कहे मन चीतवे ।। जब लग मेरा होय ।।३१।।

जगत रसना से वचन बोलते है,श्रवण से वचन सुनते है तथा मन से और चित से चितते है वहाँ तक मेरी ही सत्ता है । ऐसा काल आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज को कह रहा है । ।।३१।।

तीन लोक मे को नहीं ।। के मो शिर करतार ।।
काळ कहे मै जाण करूं ।। सोइ सोइ होणे हार ।।३२।।

तीन लोक मे मेरे सिरपर कोई भी करतार नही है । मै जैसा चाहुँगा और करुँगा वही होनेवाला है । ऐसा काल आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज को कह रहा है ।।।३२।।

मै मारूं मैं तार दूं ।। मै सुख देऊँ अनेक ।।

काळ कह मोहि बाहिरो ।। करता कोइ हन देख ।।३३।।

मै ही जिंदे को मारता हुँ,मै ही डुबनेवाले को तारता हुँ,मै ही अनेक प्रकार के सुख देता हुँ, काल आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज को कहता है की,मेरे परे मेरे से पराक्रमी ऐसा कोई करता है यह तुम सोचो मत ।।।३३।।

सरग नरक मे भेज दूं ।। मैं दुं मुगत पठाय ।।
हारे कूं जीताय दू ।। अे गुण हे मुज माँय ।।३४।।

जिवो को मै ही स्वर्ग मे भेजता हुँ और मै ही मुक्ती में पठाता हुँ । मेरे मे हारनेवाले को जिता देने का और जितनेवाले को हरा देने का गुण है । यह गुण और किसी मे नही है इसलिये मेरे से कोई बडा है यह तुम मत सोचो ।।।३४।।

जीवतड़ा मै मार दूं ।। मुवा देऊँ जिवाय ।।
मो बिन अवर न कोय हे ।। मत बद मो सूं आय ।।३५।।

जिंदे को मारता हुँ तो मरे हुये को जिवीत करता हुँ ऐसे सभी गुण मुझमे है । मेरे सिवा कोई है यह समजकर मेरे साथ विवाद मत करो ऐसा काल ने आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजको कहा । ।।३५।।

गेब सेज में प्रगटूं ।। सब का सारू काज ।।
काळ कह तिहुँ लोक मे ।। सब शिर मेरा राज ।।३६।।

मै जगत को किसी प्रकार का समज न पड्ने देते सहज मे प्रगट होकर सभी जीवो का काम सारता हुँ । इसप्रकार तिन्हो लोक के सभी पे मेरा ही राज है ।।।३६।।

काळ कह होणहार हुँ ।। तीन लोक के माँय ।।
अब करता कोहो कोण हे ।। कित हुँ आवे जाय ।।३७।।

काल ने आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज से कहा कि,तीन लोक मे मै ही होणकार हुँ अब मेरे से करता अलग ऐसे कौन रहा और वह कहाँ से आया और कहाँ जाता ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज को पुछा ।।।३७।।

जन सुखदेव तब बोलिया ।। होण हार सो झूठ ।।
साहिब हुवा न होवसी ।। इड़ग अडोलग मूठ ।।३८।।

तब आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजने काल से कहा कि होनहार यह झूठ है । साहेब कल भी था,आज भी है और कल भी रहेगा और ऐसा कोई समय नही था कि वह नही था और ऐसा कोई समय नही रहेगा कि वह नही रहेगा । वह साहेब आज दिनतक किसीसे हुवा नही और आगे भी किसी से बननेवाला नही । वह अड़िग है(ड़िगमिगनेवाला नही)और अडोलक है याने माया के समान नष्ट होनेवाला नही । ।।३८।।

तुम निरणो मुंढे कियो ।। होण हार मे होय ।।
कह सुखदेव करतार तो ।। हुवा किया नहिं कोय ।।३९।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले की,तुने ही तेरे मुखसे निर्णय करके बताया की मै होणहार हुँ, मेरे सिवा होणहार कोई नही है और कर्तार तो हुवा नही और होता नही ।।।३९।।

होण हार कूं हर किया ।। हर ने किणी न कीन ।।
सो समरथ सुखराम के ।। काळ समझ तूं चीन ।।४०।।

होणहार को तो हर करता और हर को कोई नही करता ऐसे समर्थ हर को तू समज ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने काल को कहा ।।।४०।।

चिदानंद चेतन परे ।। अखे धाम सुण होय ।।
सो साहेब सुखराम के ।। घटे बदे नहिं कोय ।।४१।।

चिदानंद पारब्रम्ह और चेतन जीवब्रम्ह के परे अखंड्ति साहेब का धाम है । वह धाम घटता भी नही और बढता भी और वैसेही वह साहेब घटता नही और बढता नही ।।।४१।।

जम राय कूं हम कही ।। मत तूं ऊनो होय ।।
हंस सकळ हे ब्रम्हका ।। तें जुग किया न कोय ।। ४२ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जमराय को बोले कि तू क्रोध मत कर । ये सभी हंस सतस्वरुप ब्रम्ह के है । ये हंस तेरे किये हुये नही है ।।।४२।।

ने:चे तो शिर कोपसी ।। सांई सिरझन हार ।।
के सुखराम जम सोच के ।। बेगी थकी समाळ ।।४३।।

सिरजनहार साई के विरोध मे चलने से साई तुझपे निश्चित ही कोपेंगा । वह तुझपे कोप नही करे इसलिये तू जल्दी समल जा और साहेब के विरोध मे मत जा ।।।४३।।

।। काळ उवाच ।।

सिरझण हारो कोण हे ।। मो कूं गम न कोय ।।
धर ब्रहमंड आकाश तो ।। अे मै रचिया जोय ।।४४।।

सिरजनहार कौन है?यह मुझे मालूम नही । धरती,आकाश,वायु,अग्नी,जल,पृथ्वी,३ लोक १४ भुवन,चार पुरीया ये मैने ही रची है ।।।४४।।

ब्रम्हा बिसन महेश सो ।। नर नारी आकार ।।
अे सब हाथां मै किया ।। मै तारूं दुं मार ।।४५।।

ब्रम्हा,विष्णु,महादेव और सभी नर नारीयो के आकार मैने मेरे हाथसे किये है । इन सबको मै ही तारता हुँ और मै ही मारता हुँ ।।।४५।।

मै राजा मै पातशहा ।। मै सूर राकस होय ।।
देह धारी जमराय के ।। मो बिन अवर न कोय ।। ४६ ।।

काल कहता की मै ही राजा हुँ, मै ही बादशाह हुँ और मै ही देव हुँ और मै ही राक्षस हुँ । ये सभी अंग मैने ही धारण किये है । इसलिये मेरे सिवा ओर कोई नही है ।।।४६।।

मै सिध साधक पीर हुँ ।। मै धरियाँ अवतार ।।
के जंवरो मोय बायरो ।। क्या कहिये करतार ।।४७।।

मै ही सिध्द हुँ, मै ही साधक हुँ,मै ही पीर हुँ और मै ही सभी अवतार हुँ । मेरे सिवा ओर कोई है ही नही ।।।४७।।

तीन अंग मै धार लूं ।। बाता करूं अनेक ।।
जम कह मोहो बाहेरो ।। करता कोई हन देख ।।४८।।

मै पैदा करने का,पालन करने का और संहार करने का ऐसे तीनो प्रकार का अंग मै ही धारण करता हुँ और तीन लोक की सभी बाते मै ही करता हुँ । अब मेरे से अलग मुझे कोई भी नही दिखता ।।।४८।।

राजी होय पेदा करूं ।। सुख दु:ख समता धार ।।
तामस कर जमराय के ।। सब कूं देऊँ मार ।।४९।।

मै राजी होकर सभी को पैदा करता हुँ,मै सभी को सुख देता हुँ,मै सभी को दु:ख देता हुँ,मै समता धारण करता हुँ और मै तामस करके सबको मार देता हुँ ऐसा जमराज ने आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज को बताया ।।।४९।।

पाँच तत्त गुण तीन हे ।। प्रगट कहिये सोय ।।
ओ सब मेरो रूप हे ।। सुभ असूभ अंग दोय ।।५०।।

पाँच तत्व आकाश,वायू,अग्नी,जल,पृथ्वी तथा रजोगुण ब्रम्हा,तमोगुण महादेव,सतोगुण विष्णु जो जगतमे प्रगट है वे सभी मेरे रुप है । इसप्रकार अच्छे और बुरे ये सभी मेरे रुप है ।।।५०।।

कुण साहेब को मो बिनॉ ।। अब तुम करो बिचार ।।
खंड पिंड मेरो रूप हे ।। मे राळली धार ।।५१।।

मेरे सिवा कौन अलग साहेब है इसे तुम बिचार करके देख लो । खंड पिंड ये सभी मेरे रुप है । ये सभी मेरी लिला है ।।।५१।।

चित्त मन बुध्द ज्याहाँ लग फिरे ।। तहाँ लग मेरा राज ।।
जंवरो कह सुखराम कूं ।। घट घट मेरी आवाज ।।५२।।

चित व मन जहाँतक फिरता है तब तक मेरा ही राज है । जम आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज को कहता है की घट घट मे मेरा ही आवाज है याने मेरा ही राज है ।।।५२।।

अनहद बाज्या घुर रहया ।। नाद रहयो गरणाय ।।
कह जंवरो रंरकार धुन ।। जहाँ लग ओऊँ जाय ।।५३।।

अनहद बाजे घुर रहे है,नाद गरणा रहा है,ररंकार और ओअम की ध्वनी जहाँतक पहुँच रही है वहाँ तक मेरा ही राज है ।।।५३।।

आगे अब करतार कूण ।। कह जंवरो कोहो मोय ।।

ओऊँ अजपो राम धुन ।। अे सब मेरी होय ।।५४।।

ओअम,अजपो,रामधुन यह सब मेरी धुन है । अब इसके आगे करतार कौन है?यह मुझे बतावो ।।।५४।।

मै बोलु मैं सुण रहयो ।। मै कथुं करूं गिनान ।।
मै उथापु जमराय के ।। मै सब थांपु आण ।।५५।।

मै ही बोलता हुँ,मै ही सुणता हुँ,मै ही ज्ञान करता हुँ और मै ही ज्ञान कथता हुँ,मै ही सभी थापता हुँ और मै ही उथापता हुँ ।।।५५।।

ब्रम्हा बिसन महेस सो ।। सगत निरंजण राय ।।
के जंवरो त्रिर लोक सो ।। मेंरी मुठ्ठी माय ।।५६।।

ये ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ती,निरंजन और ये सभी तीन लोक मेरे मुठ्ठी में है ।।।५६।।

चोरासी लाख जीव का ।। देवळ देऊँ नित ढाय ।।
फिर चोरासी नित करूं ।। ओ प्राक्रम मुज मॉय ।।५७।।

चौरासी लाख जीव के सभी शरीर मै ही मिटा देता हुँ और फिरसे ये सभी चौरासी लाख योनीयाँ मै ही बनाता हुँ यह पराक्रम मुझमे है ।।।५७।।

मो कूं सब की गम हे ।। सब की सुणु फिराद ।।
चवदां तीनु लोक में ।। मो बिन नहि कोई बाध ।।५८।।

मुझे सभी की जानकारी है और सभी की फिर्याद मै ही सुनता हुँ । मेरे सिवा तीन लोक चौदा भवन मे ओर कोई नही है ।।।५८।।

।। सुखो वाच ।।

जन सुखदेव तब बोलिया ।। सुण जम बेण हमार ।।
तो सूं इधका ब्रम्ह हे ।। ज्याँ कोई जीत न हार ।।५९।।

इसपर आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने जम को ज्ञान सुनाया और कहा कि,तेरे से अधिक पराक्रमी व न्यारा सतस्वरुप ब्रम्ह है । वहाँ ३लोक १४ भवन के समान जीत भी नही और हार भी नही । वहाँ सदा एकसरीखी अवस्था है ।।।५९।।

तीन लोक की तुम कही ।। सो घड़ियोड़ा होय ।।
मै अनघड़ सुखराम के ।। देस बताऊँ तोय ।।६०।।

तीन लोक का जो तुमने कहा वह घडे हुये देश की बाते है और मै अनघड देश की बाते बता रहा हुँ ।।।६०।।

वाँ कोई जीत न हार हे ।। दुभध्या दुज न कोय ।।
मैमा सुण उण लोकको ।। बरण बताऊँ जोय ।।६१।।

वहाँ जीत या हार कोई नही है । वहाँ पे दुबध्या दुज याने जीत हार ऐसे दो भाव नही है याने किसी को छोटा या बडा लेखा नही जाता । मै तुझे उस देश की महीमा वर्णन करके

बताता हुँ वह तू सुन ।।।६१।।

ज्याँ मे बार न पार हे ।। ना कहुँ आवे जाय ।।
अखंड ज्योत सुखराम के ।। घट घट लोका माय ।।६२।।

उस देश का वारपार नही है । वह कही आता भी नही और जाता भी नही याने ३ लोक के समान बनता भी नही और मिटता भी नही । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज काल को कहते है की उस देश मे हर घट घट मे अखंड्ति ज्योत है ।।।६२।।

जां को वार न पार हे ।। मध न कहिये को ।।
सो साहेब सुखराम के ।। जम हंसा पर होय ।।६३।।

उस साहेब का वारपार नही आता । उस साहेब का मध्य भी नही आता । ऐसा साहेब हंसो के उपर है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जम को कहते है ।।।६३।।

तेरे सुण आधार हे ।। सो पुरूष कोण कहाय ।।
के सुखराम जमराय कूं ।। समझ सोच मन मॉय ।।६४।।

तेरे सुन आधार है वह पुरुष कौन है यह मन मे सोच समजकर मुझे बता ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जम को पूछ रहे है ।।।६४।।

सुखराम अधर सत्त लोक हे ।। अधर जमी वाँ जाण ।।
वा दीठा आ येथली ।। कर नर हात पिछाण ।।६५।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जम को कहते है कि वह सतलोक अधर है । वहाँ की जमीन अधर है । जैसे मनुष्य के हाथके हथेली निचे से बिना आधार की है वैसे वह देश अधर है ।।।६५।।

गिगन गरजे गेब का ।। जेसी गोरम गाँज ।।
संत दुवाई उण देश में ।। अर संताई का राज ।।६६।।

जैसे गौये शाम को जंगल से घर पे आती है वे गरजना करती है वैसे वहाँ के गिगन से मधुर लगनेवाली गर्जना होती है । वहाँ पे संतो का हुकुम चलता और संतो का ही राज चलता । ।।६६।।

ब्रम्ह मॉय सुख दु:ख नही ।। अर माया दु:ख को रूप ।।
अमर सुख माया अखंड ।। सुखिया वो देस अनूप ।।६७।।

(होनकाल)परब्रम्ह मे सुख और दु:ख नही है और माया दु:ख का मूल है । सतस्वरुप मे अमरसुख है,न मरनेवाली माया है इसप्रकार माया और ब्रम्ह देश से वह देश अनूप है ।।६७ ।।

चन्दण मिण चहुँ दिस जड़या ।। सकळ भवन उजियाळ ।।
जन सुखिया उण देश में ।। कोइ कानां सुण्यो न काळ ।।६८।।

उस देश मे चंद्रमणी चहुँ दिशा मे जडे है,सभी भवनो मे चंद्रमणीयोका प्रकाश हो रहा है ।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,उस देशमे किसीने कानोसे भी काल सुना नही । ।।६८।।

अधर दीप वो झिग मिगे ।। जाँमे अमर अेबास ।।
निरभे संत बिराजिया ।। ज्याँ रा नही बिणास ।।६९।।

वह दिप अधर है । वह प्रकाश से झिगमिग झिगमिग कर रहा है । उसमे अमर निवास है । वहाँ निर्भय संत बिराजमान हुये है । उन संतो का कभी भी विनाश नही होता ।।।६९।।

जामण मरणा ज्याँ नही ।। ज्याँ नहीं सासा सोग ।।
मोहो माया व्यापे नही ।। वाँ संत जना के लोक ।।७०।।

वहाँ जन्मना और मरना नही है और जन्मने और मरने की चिंता फिकीर भी नही है । उस संत जनो के लोक मे मोहमाया व्यापती नही ।।।७०।।

वा जागा अेसी कहीं ।। निरभे भे नहिं कोय ।।
कयाँ सुण्याँ माने नही ।। देख्याई सुख होय ।।७१।।

वह जागा निर्भय है । वहाँ किसीका भी भय नही है । वहाँ के सुख बतानेसे कोई समजता नही इसलिये कोई मानता नही । वहाँ पहुँचकर लेने पे ही वे सुख समजते ।।।७१।।

काळ दोड चरणा पडयो ।। सुण्यो ब्रम्ह को भेव ।।
अमर लोक संता तणो ।। मैं देखूं गुरूदेव ।।७२।।

यह सतस्वरुप ब्रम्ह का भेद सुनकर काल दौड्कर बिना विलंब करते आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज के चरण मे पड्ा व संतो के अमरलोक मे मुझे चलना है ऐसा गुरु महाराज को विनंती करने लगा ।।।७२।।

तीन लोक हद चूर कर ।। बेहद माय समाय ।।
बिन अग्या सुखराम के ।। बेहद लंगी न जाय ।।७३।।

काल को तीन लोक की हद पारकर बेहद याने ब्रम्ह मे समाते आया परंतु उससे बेहद लंघे नही गया । बेहद खुद के बलसे लंघे नही जाती उस सतगुरु की सत्ता चाहिये ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ।।।७३।।

काळ उलट पाछो पड्यो ।। आघो सक्यो न जाय ।।
सुखराम चले सत्त लोक कूं ।। लीया सखी बधाय ।।७४।।

इसप्रकार काल से बेहद लंघे न जाने कारण बेहद मे उलटा वापीस आ गया व आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बेहद के परे सतलोक निकल गये और साथ मे लिया सखी बधाय । ।।७४।।

तम कोहो सो सब साच हे ।। मों कूं सूझे नाय ।।
काळ कहे सुखराम कूं ।। हम कूं ल्यो तुम माय ।।७५।।

काल आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज को कहता है की आप जो कह रहे वह सत्य है ।

मुझे वह देश पाने की समज नही रहा । इसलिये आपही मुझे उस देश ले चलो ।।।७५।।

मै सरणे सो आव सूं ।। कहो सो लेसूं धार ।।
काळ कह सुखराम कूं ।। सत्तगुरू मोय उधार ।।७६।।

आप कहोगे वैसा मै शरण लुँगा और आप कहोंगे वह ज्ञान,ध्यान,विधी मै धारण कर लुँगा । काल आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज को सतगुरु मानकर खुद को शिष्य बनाकर उध्दार करने की प्रार्थना करता ।।।७६।।

भेद बताओ नाँव को ।। मै दासन को दास ।।
काळ कह उर लाग रही ।। अखंड धाम की आस ।।७७।।

आप मुझे सतनाम का भेद बतावो । मै आपके दासो का भी दास बनके रहुँगा । काल आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज से कहता है की मेरे उर मे अखंड धाम की आशा लगी है ।।।७७।।

तम मो कूं संग ले गया ।। तीन लोक के पार ।।
जां दिन मेरे उर लगी ।। जीवण ध्रक हमार ।।७८।।

जिस दिन आप मुझे तीन लोक के पारवाले अखंड धाम को संग ले गये उस दिन मेरे हृदय में मै झूठा ही ३ लोक १४ भवन और ३ ब्रम्ह के १३ लोक का मालिक बनके बैठा यह समजा और इस सोच से मेरे इस प्रकार के जीवन पाने का धिक्कार लगा ।।।७८।।

जन सुखदेव कहे काळ कूं ।। दुष्ट अंग दे छाड़ ।।
निरमळ होय कर आवज्यो ।। दे कुबदा सब काड़ ।।७९।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज काल को बोले की,तू मेरे पास तेरे सभी दुष्ट अंग छोड्कर और सभी प्रकार की कुबुध्दीया काड्कर निर्मल होकर आ ।।।७९।।

बाचा दे निरपख हुवा ।। निराधार होय आव ।।
जब तारूं सुखराम के ।। धर उर निरभे भाव ।।८०।।

निरपक्ष होने के बचन दे और कोई आधार न रखते निराधार होकर आ व साहेब का निर्भय भाव हदय मे धारण कर फिर ही मै तुझे तारुँगा ।।।८०।।

आपो तज दे आपदा ।। हुँ पद देर बुहाय ।।
जब तारूं सुखराम के ।। अेसो हुयर आय ।।८१।।

तुझमे साहेब पाने की आपदा का अहमपद है वह अहमपद बहा दे । ऐसा निर्बल होकर आ फिर मै तुझे तारुँगा ।।।८१।।

खा साहेब की सूंसरे ।। देर पटोले गांट ।।
तो तांरू सुखराम के ।। सब तज हर सूं सॉट ।।८२।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जम को कहते है की पटोले गांठ बांधकर साहेब की कसम खा और विकार तजकर हर से मजबूत जुड तो मै तुझे तारुँगा ।।।८२।।

सुखराम काळ कूं हंस किया ।। दे दे अपणो रंग ।।
आठ पोहोर लव लीन होय ।। निमक न छाड़े संग ।।८३।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजने कालको अपना रंग दे देकर कौएँ का हंस बना दिया । अब काल एक पल भी सतशब्दका संग न छोड़ते आठो पोहोर सतशब्द मे लवलीन हो गया ।८३।

काळ करम सो छाडियो ।। अेक रहयो उरधार ।।
सुखराम क्रोड निनाणवें ।। हंस कीया सो पार ।।८४।।

काल ने काल के सभी कर्म त्याग दिये और सिर्फ सतशब्द हृदय मे धार लिया । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने कहा कि निन्यानवे करोड हंस भवसागर से पार किये ।।।८४।।

अेता हम सब संग लीया ।। हंस त्रेता जुग माँय ।।
सुखराम काळ कुंई तारियो ।। पडणे दीयो नाँय ।।८५।।

ये निन्यानवे करोड हंस हमारे संग त्रेतायुग मे पार हुये आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने काल को भी भवसागर मे न पड़ने देते संगकर भवसागर से पार किया ।।।८५।।

हंस पहुँता सत्त लोक मे ।। हम बी चले वाँ जाय ।।
सुखराम ग्यान कूं धर चल्या ।। तीन लोक के माँय ।।८६।।

अनेक हंस सतलोक मे पहुँच गये और मेरा सतलोक पहुँचने का ज्ञान तीन लोकमे रखकर मै भी आज सतलोक निकला ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने सभी नर नारीयो को कहा ।।।८६।।

निरभे हेला मे दिया ।। मरत लोक मे आण ।।
सुखराम कहे हंस जागिया ।। सुणर हमारी बाण ।।८७।।

मैने मृत्युलोक मे निर्भय देश का ज्ञान प्रगट किया । यह हमारा ज्ञान सुन-सुनकर अनंत हंस जागृत हुये और हमारे सतलोक पधारे ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने कहा ।।।८७।।

रात दिन पंथ बे रहयो ।। निमक ढील नही खाय ।।
सुखराम जम के शीश पर ।। लात देत हंस जाय ।।८८।।

यह मेरे सतलोक पधारने का रास्ता रातदिन बह रहा है । पलभर के लिये भी ढिला नही पड़ता । ये मेरे हंस जमराज के सरपर लाथ रखकर सतलोक पधारते ।।।८।।

मोख पंथ जमराय के ।। शिर ऊपर होय जाय ।।
रात दिन सुखराम के ।। हंस रहया शिर गाय ।।८९।।

यह मोक्ष पंथ जमराजके सिर के उपर से जाता । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,जमराज के सिर की पायरी कर रात-दिन हंस सतलोक पधार रहे है ।।।८९।।

मुगत गत अर अगत को ।। पंथ दियो हम भाँज ।।
सुखराम हंस निरभे हुवा ।। कोय न सक्के गाज ।।९०।।

अगती याने चौरासी लाख योनी की,नरक,भूत,प्रेतादिक के देश मे जाने का,गती याने देवतावो के देश मे जाने का और मुगती याने विष्णु के देश मे जाने का रास्ता हमने नष्ट कर दिया । जिससे हंसोपर काल के सत्ता का गाज नही रहा और सभी हंस काल से मुक्त होकर निर्भय हो गये ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ।।।९०।।

सुण सुण मेरा ग्यान रे ।। लीज्यो शबद बिचार ।।
आज्यो सब सत्त लोक मे ।। मत पड़ रेज्यो हार ।।९१।।

मेरे जाने पश्चात मेरा ज्ञान सुनकर सतशब्द धारन करना और मेरे सतलोक मे आना । कोई भी हार के पिछे मत रहना ।।।९१।।

सत्त सब्द बिन भेद रे ।। ओर कीज्यो नॉय ।।
सुखराम हंस परचाय के ।। चले अगम के गाँव ।।९२।।

सतशब्दके बिना और कोई शब्द,क्रिया,कर्म,जप,तप आदि मत करना आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजने सभी हंसो को इसप्रकार उपदेश दिया और वे अगम देश निकल गये । ।।९२।।

अब लारे अे लोक मे ।। ग्याण सुणे सो जीव ।।
पण निर्बळ सूं सुखराम के ।। दरस सके नहिं पीव ।।९३।।

यह सतलोकमे आनेका मेरा ज्ञान जो शुरवीर जीव सुनेगा वही पीवको पायेंगा । शुरवीर छोड्कर निर्बलसे मेरा सतशब्द धारन नही होगा इसकारण निर्बल पीवको पा नही सकेगा । ।।९३।।

|| भाषा ||

अठे सुखरामजी महाराज को ध्यान खुल्या बरोबर तुळछाजी सारी हकिकत कही,दुसरे दिन तुळछाजी को अंत हुय गयो जाण कर मेलाणा सूं लालदासजी मिलणे ने आया,ओर आगे तुळछाजी जीवता लाद्या ।। तुळछाजी लालदासजी ने पुछ्यो तुमा रात का म्हणे प्रसादी देवण ताइ आया हाँ काँई,जद लालदासजी कयो मै तो रात का अठे आयो नहीं,रात भर मेलाणे इ हो,हरकिशन जी रात को तुमारो काळ हे करके बोल्या जिण सूं मै आयो हूँ,ओर पिछ गाँव मे जाय कर तुळछाजी ठाकरा तेज सिंग जी ने पूछ्यो रात का आप आया हाँ कांई जरा कंवर जेत सिंगजी कयो आप जी रात का कठेइ गया नही अठेइ हा,जद सत्तगुरू सुखरामजी महाराज बोल्या तुमारो आज को तो काळ टाळ दीनो पिण आखर जाणो तो पड़सी ।। सिध अवतार जन पीर पैकंबर ।। थिर संसार नहिं रहयो कोई ।।

|| साखी ||

दोय जुग मे रेव सूं फेर जगत के मॉय तेरे दिन थोडा रया साथे चलसा नाँय ।।

|| भाषा ||

अब थारी ऊमर का दिन बाकी थोडा रया जिण सूं अबार साथे चालणो हुवे नही जद तुलछाजी

बोल्या आप मोख जासो जद जठे रे वसू उठा सूं सोध कर म्हने आपके साथ ले जाईज्यो उठे तुळछाजी को अंत हुय गयो ओर तुळछाजी को जीव रछोला में जाय कर जनम लियो रछोला में नाँव गिरधर रख्यो,सत्तगुरू सुखरामजी महाराज तुळछाजी ने काळ कने सूं छुडाय लिया उण काळ ने भी चेलो करके मोख भेद दिया तिका काळ दुजो हो ओर लारा सूं अ बार काळ का ओदा पर आयो तिको काळ दुजो हो, दुजो काळ(काळ पणो का ओदा पर आयो)उणाने महाराज को प्राक्रम मालुम हुवो जिण सूं वो बी काळ महाराज सूं मिलण ने आयो महाराजसूं संवाद कऱ्यो(काळ को ओर महाराज समाद हमारे हात लागो तिको पूरो हात लागो नहीं अधूरो हात लागो, तिका बी आगो पाछो ओर अस्ता व्यस्त हे ।।

।। भाषा ।।

कोई बी थीर रेवे नहीं जद तुळछाजी बोल्या आप मोख जाबोला जद म्हने भूलज्यो मतीना म्हने साथे लेय जाणो को बचन देवो,जद महाराज कयो ।।

इधर सुखरामजी महाराजका ध्यान खुलते बराबर तुळछाजीने महाराजसे सारी हकिकत बताई हरिकिसन की काल आने की बात बताये अनुसार दुसरे दिन तुळछाजी का अंत हो गया होगा ऐसा समझके मेलाणे से उनके गुरु लालदासजी मिलने के लिये आये । और सामने उन्हे तुळछाजी जिवीत मिल गये । तुळछाजीने लालदासजीसे पुछा आप रातको मुझे प्रसाद देनेके लिये आये थे क्या?तब लालदासजीने कहा मै तो रातको यहाँ आया ही नही रातभर मेलाणेमे ही था । हरकिशनजीने बताया था रातको तुम्हारा काल आनेवाला था इस वजह से मै आया हुँ । फिर बादमे तुळछाजीने गाँव मे जाकर ठाकुर तेजसिंगजी से पुछा रातको आप मेरे पास आये थे क्या?तब कुंवर तेजसिंगजी ने कहाँ हम तो पुरी रात कही भी गये नही यहाँ ही थे । तब सतगुरु सुखरामजी महाराजने कहा तुम्हारा आज के काल को(पलटा)टाल दिया लेकीन आखीर एक दिन तुम्हे जाना ही पडेगा । (सिध्द,अवतार,जत,पिर,पैगंबर संसार मे कोई भी स्थिर नही है)तब तुळछाजी बोले आप मोख मे जाओगे तब मुझे मत भुलना मुझे साथमे ले जाने को बचन दो । तब महाराज ने कहा,अब तुम्हारी आयु(उमर)के दिन थोडे ही बाकी रह गये है सो अभी साथमे चलना होगा नही । तब तुळछाजीने कहा आप मोख मे जाओगे तब जिस जगह रहुँगा वहासे मुझे खोज कर आपके साथ ले जाना । वहाँ पर तुळछाजीका अंत हो गया और तुळछाजीका जिवने रछोलामे जाकर जनम ले लिया जहाँ उनका नाम गिरधर रखा गया । सतगुरु सुखरामजी महाराज ने तुळछाजी को काल से छुडा लिया और उस कालको भी शरण मे लेकर शिष्य बनाकर मोक्ष मे भेज दिया । वह काल दुसरा था । और पिछेसे अभी जो कालके ओहदे पर आया वह काल दुसरा है । दुसरा काल(कालपणेके ओहदे पर था)उसको भी महाराजको पराक्रम मालुम हुआ जिससे वो काल भी महाराजसे मिलने आया और महाराजसे संवाद किया(कालका और महाराजका संवाद जितना हाथ लगा वह भी पुरा हाथ आया नही अधुरा ही हाथ लगा वह भी आगे पिछे और अस्ताव्यस्त है).

।। साखी ।।

मोख पंथ बेतो हुवो ।। अटक सके नही कोय ।।
जब हम गया उण लोक में ।। सखी पुरूष हे दोय ।।१।।

किसी से अटक नही सकता ऐसा मोक्ष पंथ बहने लगा । इसलीये मै अमरलोक निकल गया । सखी पुरुष हे दोय ।।१।।

वाँ हम जायर फिर सुणी ।। काळ लिया हंस घेर ।।
राज जमायो आपको ।। किया सरब कूं जेर ।।२।।

अमरलोक पहुँचनेके कुछ समय पश्चात कालने फिरसे हंसोको माया मोहमे घेर लिया यह समझा । काळ ने फिर से हंसोको माया मे घेर कर हंसोपर अपना राज जमाया व दु:ख दे दे कर जेर किया जिससे हंस मायामे लग गये ।।।२।।

अखंड़ लोक मे धुन हुई ।। हुवो ओ काहा बिचार ।।
मोख पंथ किऊँ थक रयो ।। रहयो हंस क्यूँ हार ।।३।।

अखंड लोक मे संतोमे आपस मे काळ ने हंसो को घेर लिया जिससे मोक्ष पंथ थक गया व हंस काल से हार रहे है इसका विचार मशहुरा सुरु हुआ ।।।३।।

जब हम धरिया ध्यान रे ।। देख्यो अरथ बिचार ।।
हंस दु:खी सुखराम के ।। रहया धरम सूं हार ।।४।।

आदि सतगुरु सुखरामजजी महाराज कहते है जब मै ध्यान मे बैठा व क्या हो रहा यह हकीगत देखी तो दिखा की धर्मराज से हार रहे इसलीये हंस दु:खी हो गये।।४।।

हंस त्रास साहेब सुणी ।। जब आ भई आवाज ।।
सत लोक सुखराम के ।। रही अखंड धुंन गाज ।।५।।

यह त्रायमान त्रायमान होने की बिनाखंण्डित गुंज साहेब को समझी ।।५।।

सगत कहयो तुम सांभळो ।। आ धुन कहो किऊँ होय ।।
अखंड लोक मे घुर रही ।। निमक खंडें नही कोय ।।६।।

तब सगती ने पुछा की,यह धुन कहा से आ रही अखंण्डित है जरासी भी खण्डित नही हो रही यह ढूंढो ।।।६।।

सगत सांभळो बेण अे ।। चलो हमारी लार ।।
के सखी संग दो आप की ।। जिऊँ हंस लाऊँ तार ।।७।।

तब आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने शक्ती को साथमे चलने को कहा व कहा की आपका साथ रहने पे मै हंसोको तार के ला सकुंगा ।।।७।।

सखी कहे मै नहीं चलुं ।। तुम जावो रिष राय ।।
भीड पडे तो याद कर ।। लीजो मोय बुलाय ।।८।।

तब सखी ने कहा मै साथ चलती । आप ऋषीजी आप अकेले जावो । भीड याने हंस अमर लोक लानेमे कष्ट पडे तो मुझे बुला लेना मै आ जाऊँगी ।।।८।।

के सुखदेव मै चालिया ।। जब सगत कही आय ।।
बेग हंस ले आवज्यो ।। रहज्यो मत वो जाय ।।९।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले मै अकेला हंसोको कालसे छुडानेके लिये अमरलोक से चल पडा तब शक्ती ने कहाँ मृत्युलोक मे ज्यादा दीन मत रहना जल्दी जल्दी हंसो को ले आना ।।।९।।

पाछा फिर हम मेलिया ।। सखी संग दे मोय ।।
निरमळ भगत चलावज्यो ।। ज्युँ मेमा जुग होय ।।१०।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की मुझे सखी को साथ देकर जगत मे भेजा व साहेब ने कहाँ की जगतमे निर्मल ज्ञान सुनाना । जिससे जगत को सतस्वरुप की महीमा समझेगी याने अतृप्त दु:ख भरे माया के सुख व दु:खरहीत सतस्वरुप के तृप्त सुखोकी समज सभी नर नारी को आयेगी ।।।१०।।

तुम निरभे मत धार के ।। हेलो दो जुग माँय ।।
सेजां सब साहेब कहे ।। पड़सी पावाँ आय ।।११।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज को कहा की आप काल का भय न रखते निर्भय मत धारण करना व जगतमे निर्भय ज्ञान सुनाना । जगत मे निर्भय भक्ती सुनाने से काल व कालके मुखमे रखनेवाले ब्रम्हा,विष्णु,महेश,शक्ती आदि देवता व औतार ये सभी तुम्हारे पैर पडेंगे ।।।११।।

जब हम कूं अग्या भई ।। मरत लोक मे जॉय ।।
मोख पंथ बेतो करो ।। हंसा लेवो छुडाय ।।१२।।

इसप्रकार मुझे फिरसे मृत्युलोक मे जाकर हंसोको काल से छुडाकर मोक्ष पंथ बहता करनेकी आज्ञा हुयी ।।।१२।।

पाप पुनं का न्याव कूं ।। सिरज्यो हे जम राज ।।
संत सिरज्या सुखराम के ।। जीव उधारण काज ।।१३।।

परमात्मा ने पाप और पुण्य का न्याय करने के लिये जमराज को आदेश दिया है व इस जमराज की यातनासे उध्दार करनेके लिये मतलब कालके दु:ख रहित ऐसे सतस्वरुप के महासुख मे पहुँचाने के लिये संतोको औदा दिया है ।।।१३।।

जम जालम की त्रास सूं ।। हंसा करी पुकार ।।
सुखिया साहेब आविया ।। ले जन को अवतार ।।१४।।

जालीम जमके त्राससे मुक्त होने के लिये हंसोने साहेब से पुकार की तब आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की साहेब ने संत सुखराम नाम का अवतार धारण किया व मृत्युलोक मे प्रगट हुये ।।।१४।।

जब हम पाछा आविया ।। मरत लोक के माँय ।।

काळ फेर हंस घेर कर || धंदे दिया लगाय ||१५||

इसप्रकार मै मृत्युलोकमे फिरसे आया । यहाँ सभी ओर देखता तो कालने सभी हंसो को घेरकर माया के धंदेमे याने कर्म कांड मे लगा दिया ।।।१५।।

सुखराम संत जन केत हे || अजब अनोपम बात ||
भजन किया सो ऊबऱ्या || काळ सकळ कूं खात ||१६||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,मै और मेरे सरीखे,सभी सतस्वरुपी संत जगत के ग्यानी ध्यानी नर नारी समजते नही ऐसी अजब अनोपम बात कहते है की जिसने जिसने सतस्वरुप परमात्मा का नाम जपा है वे कालसे उबरे है व सतनाम छोड्कर जिसने जिसने त्रिगुणी माया का नाम या क्रिया कर्म किये है वे सभी काल के चक्कर मे फसे है व उनको काल खा रहा है ।।।१६।।

संत सुखदेवजी केत हे || सुणो जोग सिध साध ||
अणभे मॉहि केत हुँ || काळ जुग संमाद ||१७||

इसलिये आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी जोगी सिध्द व मायाके साधुओको अणभे मॉहि केत हुँ ।।१७।।

|| काळ जुग संमाद ||
पिंडत ग्यानी सब सुणो || जैन धरम प्रवाण ||
सुखराम संत जन केत हे || सब मत में तत छाण ||१८||

यह मेरा अनभै ग्यान सभी पंड्ति ग्यानी ध्यानी,जैन धर्मी सभी सुणो । सतस्वरुपी संतोने सभी धर्मो के तत्तोका छान छान कर राम नाम का रसना से भजन कर पार हो सकते यही एक मात्र सार निकाला है ।।।१८।।

सगती पंथ सब सांभळो || ओर सुणो इकतार ||
होठ कंठ रसणा बिचे || राम कहयो व्हे पार ||१९||

सभी संतोने बताया की होठ कंठसे राम नामकी रसना चलानेसे हंस यमसे पार हो जाता है । ।।१९।।

ररो ममो दोय अखर हे || सब बेदा मे सार ||
ब्रम्ह बीज यो अेक ही || संत सुखदेव बिचार ||२०||

सभी चारो वेदोमे,छः शास्त्रोमे,अठरा पुराणोमे व संतोकी वाणी ररो ममो याने रामनाम सार है व यह रामनाम सतस्वरुप पाने का एक मात्र बिज है ऐसा बताया ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने कहाँ ।।।२०।।

जब हम चड असमान में || किवी ब्रम्ह धुन गाज ||
सुखराम हंस फिर जागिया || काळ गयो सुण भाज ||२१||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है मै आसमान मे याने दसवेद्वार मे पहुँचा व मेरी दसवेद्वारमे अखंण्डित ध्वनी लगी तब हंस फिरसे चेतने लगे व काळ सतस्वरुप के सत्ता को देखकर धुजने लगा व हंसोको घेरनेसे दुर भाग गया ।।।२१।।

फेर काळ सो कल करी ।। तब मै बेठो जाय ।।
मंतर का सुखराम के ।। कोटी लिया बणाय ।।२२।।
तरक तत त्यागी हुवो ।। छलकर बेठो आय ।।
हंसा कूं सुखराम के ।। लिया गोदियॉ मॉय ।।२३।।
काळ टाळ सुण दोय रे ।। मांड रच्यो जग मॉय ।।
कूट कूट सुखराम के ।। जीव पडेसो जाय ।।२४।।
हंस ग्यान छाड़े नही ।। ओ नित घेरे आन ।।
सुखराम रजोगुण शब्द रे ।। बोल रयो मुख बाण ।।२५।।
तां मध जंवरो प्रगटयो ।। हंस लिया सब घेर ।।
सुखराम भरम देखाय के ।। किया सरब कूं जेर ।।२६।।
के सुखदेव मै आवियो ।। देहे धर जग के मॉय ।।
मरत लोक में धुन करी ।। सुणी सकळ जुग आय ।।२७।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है फिर से मै मृत्युलोक मे आया व आते जाते साँस मे काल से छुटने की रामनाम की ध्वनी चलाया व यह कालसे छुटनेकी ध्वनी सभी जगत के नरनारी सुनकर मेरे शरण मे आने लगा ।।।२७।।

जुग जम दोनुं मिल्या ।। गुष्ट करी अब आय ।।
कहो कूण ओ प्रगटयो ।। लीया जीव बुलाय ।।२८।।

तब कलजुग व जमराज दोनो ने आपस मे सल्ला बिचार किया की ये कौन प्रगटा जिससे जिव प्रेमप्रित कर रहे व हमारे माया के कर्मकांडो को त्याग रहे है ।।।२८।।

जुग कहे जाणु नही ।। तुम गल लेवो सोय ।।
बातां तो भारी करे ।। क्या जाणु कुण होय ।।२९।।

तब कलजुग जम को कहता है की वह कौन है यह मै नही जाणता व नही जाण पाऊँगा इसलीये वह कौन है इसकी दखल तुम लो । तब जम ने कलजुग को कहा की हमने आज दिन सुणी नही व हमको उपजी भी नही ऐसी हमारे समजके परेकी भारी भारी ज्ञान की बाते कहता व माया के कर्मकांड छुडाता इसलीये वह कौन है यह उससे बात किये बगैर हमे नही समजेगा ।।।२९।।

जब दोनू चल आविया ।। लडिया पेले पार ।।
सुखराम झगड फीटा पड़या ।। तब बैठा पचहार ।।३०।।

इसलीये यम व कलजुग दोनो भी आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज के साथ झगड्ने के

लिये आते । झगड्ते झगड्ते फीटे पड्ते व अंतीम मे हारकर शांत बैठ जाते ।।।३०।।

फेर भरम पेदा किया ।। धरम करम अे दोय ।।
सुखराम नाँव बिन अे के रहया ।। रात दिवस कल अे हे ।।३१।।

त्रिगुणी मायाके धर्मोसे व कर्मकाण्डोसे सुख कैसे मिलता यह भ्रम हंसोमे पैदा करने की कोशीश की फिर भी आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की नाम बिन अे के रह्या ।।३१।।

हंस न माने अेक ही ।। कोट जग के आय ।।
सुखराम शब्द मे रो सुण्या ।। कोय न आवे दाय ।।३२।।

कोटी उपाय करने पे भी हंस इनकी एक भी बात नही मानता था । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है अमर लोक के सुख का मेरा ज्ञान सुणणे के बाद जगत का कोई ज्ञान था तीन लोक के एक भी सुख की विधी किसी भी हंस को भाँती नही ।।।३२।।

लाख बात जग की सुणे ।। मेरो अेक बिचार ।।
सुखराम लाख ही रद हुवे ।। लेत शब्द मेरो धार ।।३३।।

लाखो बाते जगत की सुण ली व किसी कारण से मेरी एक भी बात सुणणे मे आ गयी व वे मेरे शब्द समज मे आ गये तो जगत की लाखो बाते सुणणेवाले के मनसे सभी लाखो बाते रद्द हो जाती ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।३३।।

मोख पंथ बेतो हुवो ।। जम पच बेठा हार ।।
सुखराम हंस अब चालिया ।। लेखो सही अपार ।।३४।।

मैने मोक्ष पंथ बहता किया । मोक्ष पंथमे रोडे डालनेवाला यम मेरे से पचपचकर थककर हार बैठा । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,अलेखो याने गिणे नही जाते इतने अपार हंस अमरलोक पहुँचने लगे ।।।३४।।

क्रोड जींव मोसूं मिल्या ।। द्वापुर मे जे आय ।।
सुखराम मोख कूं भेजिया ।। चोडे तबल बजाय ।।३५।।

एक करोड जीव मुझे द्वापार युग मे मिले उन्हे मैने जमके सामने बाजा गाजा से मोक्ष को भेज दिया ऐसा गुरु महाराज कह रहे ।।।३५।।

हरि अग्या अेसी दई ।। राम रसायण पाय ।।
सुखराम संत जन के रया ।। आये सत्त जुग माँय ।।३६।।

हरी आज्ञा से मैने सतजुग मे हंसो को रामनाम का रसायन पिलाया । ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कह रहे है ।।।३६।।

सत्त जुग में मै आवियो ।। देहे धर जुग के मॉय ।।
हंसा कूं सुखराम के ।। जम सूं लिया छुडाय ।।३७।।

सतजुग मे मै देह धारण करके आया व हंसो को जमसे छुडाया ।।।३७।।

सुखराम आया अब जुग मे ।। केणे लागा ग्यान ।।
काळ सुणर पावाँ पड़यो ।। लिवी सरब बिध मान ।।३८।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,अब मै कलजुग मे आया व जगतके ज्ञानी, ध्यानी,नर–नारीयोको निर्भय ज्ञान देने लगा । ज्ञान सुणकर काळ मेरे चरण पडा व हंसोको अमरदेश भेजने के मेरे विधी को माना ।।।३८।।

।। इति तुळछाजी की बिगत संपूरण ।।

।। अथ महाराज को बिराही त्याग ।। लिखंते ।।

अठीने तुळछाजी रछोला में जनम लियो,महाराज ने ध्यान में दीस्यो जद महाराज बिचार कऱ्यो अबे बिराही में न्यात करके रछोला रवाना हुय जाणो जिण सूं महाराज न्याँत मांडणे को बिचार कऱ्यो,जद लोका गाँव का ठाकर जेत सिंगजी का कंवर केर सिंगजी(केशर सिंगजी)ने कयो सुखरामजी मेळो करे हे सो मेळो कारणे सूं बिराही सुखरामजी की बाजणे ने लाग जासी ओर आपकी(कर्म सोता की)बिराही बाजे हे तको आपको(कर्म सोता को)नाँव ऊठ जासी जिण मुजब खेड़ांपो साधाँ को बाजे हे जिण मुजब बिराही सुखरामजी की बाजणे ने लाग जासी जद गाँव का ठाकर जेत सिंगजी कां कवर(केर सिंगजी)केसर सिंगजी सत्तगुरू सुखरामजी महाराज ने बुलाय कर कह्यो तुमा मेळो करो हो सो मेळो करो मतीना जद सत्तगुरू सुखरामजी महाराज ठाकर ने कयो,हमा तो न्यात करा हाँ मेळो कराँ नहीं जद कंवर केर सिंगजी बोल्या तुमा झूट बोल कर न्यात को केवो ओर मेळो करो हो सो हमा तो कोइं तरें सूं तुमाने करणे देवाँ नहीं जरा महाराज कयो हमारी न्यात गई ओर तुमारी बिराही गई अेसे बोल कर महाराज रछोले जाणे सारू बिराही सूं निकळ गया पीछे थोड़ा दिनां सूं बिराही ठाकर के केसर सिंगजी कने सूं बिराही समत १८६८ की साल उत्तर कर नाथजी कै हुय गई महाराज बिराही सूं रवाना हुया साथे बेल गाड़ी बेला की जोड़ी ओर आपका बेटा बगतरामजी सूंजाजी मानजी तथा तीजीवार परणी जका आप की जोड़ायत गाड़ी रस्ते रवाना होया बिराही,सूं रवाने होय कर तालणपुर आया,तालण पुर मे महाराज का चेला राघो दासजी गुजर गोड़ रूणेजा जोसी रेवता हा तिका जलम का आंधा ओंर बिलकुल भोळा ब्राम्हण हा,जिण सूं महाराज बिचार कऱ्यो ओ राघोदास हमारो चेलो हुय कर लारे रूळ जासी(भर्म जासी)जिण सूं राघो दासजीने बोल्या राघोदास तुमा हमारे साथे चालो(राघोदासजी कने सू चेला के नाता सूं कुछ चाकरी तो कराणी ही नही कारण राघोदासजी जलम का अंधा हा कुछ समझता ही नही,राघोदासजीने साथे लेवणमें महाराजका जीवने उलटी अद्ये(तकलीफी)हुँती पण महाराज आप को बिड़द बिचार करके ओ जीव म्हारो चेलो हुय कर भटक जांसी जिणसूं)राघोदासजी ने महाराज कयो हमारे साथे चालो पण राघोदासजी सफा नट गया के हमाने आवड़े नहीं(सत्तगुरू सुखरामजी

महाराज की संगत पर सूं अॅवार के फेंक देवे अेसी महाराज की संगत वा अेसी संगत मे साथे जाणे में आवड़े नहि करके के दिया सो महाराज के तो कुछ अड़ियो होई नहीं,महाराज तो इणारे जीव रे वास्ते साथे ले जाता हा पिण जाणो कबूल कऱ्यो नहीं,फेर महाराज बोल्या आगली साल समत्त १८६९ की साल में काळ पड़सी,जीवाँ का बुरा हवाल होसी तिका थारा सूं देखीजसी नहीं थारो जीव दु:ख पासी फेर बी कहयो म्हने तो आवड़े नही तीन वार महाराज का बचन उथाप दिया,(सनमुख जके चले गुरू शब्दाँ बेमुख बचन उथापे)बेमुख होण ने कुछ उसीर थोड़ी हि लागे सत्तगुरा को बचन उथाप्यो के बेमुख हुयो.फेर महाराज सुखसारण जी ने कयो सुखसारण तुम हमारे साथे चालो जद सुखसारण जी हुस्यार हा समजणा हा वे बोल्या म्हारा गुरू राघोदासजी हे ओर आंधा हे सो उणारी सेवा में रेणो हो म्हारो धरम हे जिण सूं म्हेतो म्हारा गुराँ कने रेसुं युँ बोल कर नाको काढ लियो जद सत्तगुरू सुखरामजी महाराज बोल्या थारो केणो बराबर हे.युँ बोल कर रछोले जाणे सारू रवाने हुय गया,लारे राघोदासजी महाराज भेष लेय लीनो भेष कूंण दीनो तिकी मालम नहीं सत्तगुरू सुखरामजी महाराज तो भेष दीनो नहीं लारा सूं समत्त १९०२,की साल जेट बदी २ ने राघोदासजी को अंत हुयो.जद राघोदासजी अंत समय मे बोल्या ||

|| कुंडल्या ||

अंत समय राघो कहे || अत राज करूँगा जाय ||
मिनखा देही म्हे पाय कर || सुख भोग्यो कुछ नाय ||
सुख भोग्यो कुछ नाय || जनम बामन घर लीनो ||
पुरब पाप के कारणे || रामजी आंधो कीनो ||
इन्द्राँ का सुख भोग की || म्हारे रेगी मन के माँय ||
अंत समे राघो कहे || अब राज करूंगो जाय ||

|| भाषा ||

सुखसारण जी महाराज पूछ्यो आप राज कठे करोगा जद बोल्या ||

|| साखी ||

महाराणा सरूप सिंह का || भाई सेर सिंह जाण ||
जाका बेटा शार्दुल सिंह || जां के जलमु आण ||
महाराजा बागोर घराँ || जाय मे जलम धरूँगा ||
खाणो पीणो सुख स्वाद || ओर भोग बिलास करूंगा ||
पिता पडे केद के माँय || कोई की धाक न रेसी ||
सुण सुखसारण कहुँ तोय || करूं मन माने तेसी ||

|| भाषा ||

हमा बागोर महाराज का घराणा मे महाराणा सरूप सिंहजी का भाई शेर सिंहजी का घराणा में शार्दूल सिंहजी का घर मे जलम ले कर उदेपूर को राज करसा ओर अेस आराम करके सुख भोगसा ओर हमारे देही पर लसण को सेनाण रेवसी महाराणा शंभुसिंह जी को

जलम शेर सिंहजी के घराणामे शार्दूल सिंहजीके घरा समत्त १९०४ पोहो बदी १ सन १८४७ ई.तारिक २२ दिसम्बर ने हुयो ओर गादी समत्त १९१८ काती शुध्द १५ सन १८६१ ई. तारिक १७ नवम्बर ने गादी पर बैठा उठे(उदेपूर में)बुरी सोबत के कारण दारू पिवण की आदत पड गई जिण सूं एयासी भोगता ओर राज को काम बरोबर करता नही ओर आप शंभु सिंहजी कदे ही बिराही तालणपूर तथा गहडे आया नहीं ओर सत्तगुरू सुखरामजी महाराज को ग्यान कदेई समाळयो नही.लारां सूं किल्याण दासजी महाराज गहड़े वाळा गहड़ा सूं उदेपूर गया ओर शंभु सिंहजी का अंग माथे लसण हे कांई जिणारी पूछताछ करी जरा लसण हे अेसी मालम हुई जरा जाय कर महाराणा शंभु सिंहजी सूं साध किल्यान दासजी मिल्या ओर बात चीत करी ओर साध कल्याण दासजी शंभु सिंहजी ने बोल्या आप ने पेली का जलम में गहड़ा बिनॉ आवड तोइ नहिं हो तिका कदेई आज तॉई गहड़ आया नही जद शंभु सिंहजी बोल्या तुमा चालो मै लारां सूं आऊँ हुँ करके बोल कर अेक कपड़ा की चादर कल्याण दासजी ने दिवी.तिकी चादर कल्याण दासजी थेट तांई जपता सूं रक्खी ।

महाराणा शंभु सिंहजी का गुण :–

केसरी सिंग ने एक लिंग सूं पीछो बुलाय ने प्रधाण बणायो पाच्चे सो काळ पड़यो जिण मे बेपारियों ने रूपियाँ की सायता देकर बापर सूं अनाज मंगवायो छबीसा मे खेरात खाणो खुलवायो मजुरी लगाणे वास्ते निमच सूं नसीरा बाद ताँई सड़क बनवाई जिण मे रूपया १८०००० एक लाख असी हजार रूपिया मजुरी लागी,जगह जगह इमारतो को काम सुरू करायो जिण मे दो लाख रूपिया खरच हुवा सहर के माय ने सफाई को प्रबंध कऱ्यो पुलिस को अच्छो परबंध कऱ्यो,शंभु निवास महल शंभु रत्न पाठ शाला सूरज पोळ हाथी पोळ अजमेर मे उदेपूर हाऊस नाँव की कोठी बनवाई ओर सडका बंनवाई, इन सेंग कामो मे बाईस लाख रूपिया खर्च हुवा अे महाराणा नम्र मृदु भाखी संकोच सील बिद्या अनुरागी बुध्दी मान सुधार प्रिये प्रजा रंजक बात चीत मे चतुर स्पष्ट वक्ता हा ओर मिलन सार हा,कदेई हलकी बात मूंडे सूं नहिं निकाळता हा हरेक आदमी सूं मेल जोल रखणे के कारण ईणाने बहोत अणभव हो गया हो सरदारों के बीच अगाड़ी झगड़ा चला आता हा तिका मिटाय दीना आपका सगा कांका शक्ति सिंह ने झगड़ा करन के कारण सूं केद कर लिया ।।

।। महाराणा का दोष ।।

जालिम सिंग पर किरपा होणे के कारण उणा का केणे सूं उणका बेटा अमर सिंगने आमेट की तरवार बंधाय दिवी पण चत्तरसिंग आमेट छोडी नही.अमर सिंघ ने चतर सिंघ आमेट दीनी नहीं जिण सूं अमर सिंघ ने खालसा मे सूं रूपिया २०००० बिस हजार रूपिया साल पेदास की मेजागी जागीर देनी पड़ी तीरथ यात्रा जाणे सारू खरचा सारू केसरी सिंघ

छगन लाल पन्नालाल कना सूं रूक्का लिखवाय लीना कान का बोहोत कच्चा हा कोई की बी बात मान लेता हा जिण पर याँकी किरपा होती उण को इतो मुलायजो राखता हा की उण का केणा सूं न्याव कूं अन्याव कर नाखता एयासी ओर आराम तलबी करणे के कारण इच्छा होता होया बी राज की व्यवस्था बरोबर नही कर सका दूजा के भरोसे सब राज काज छोड कर आप बे फिकर रेतां हा बुरी सोबत के कारण दारू पीवन की बुरी लत पड गई दारू बोहोत पींता ओर पन्नालाल महता बडो महनती ओर राज को काम करण मे हुँस्यार हो जो आप की हुँस्यारी सूं राज को काम चोखो चलायो एसा–पन्ना लाल मेहता ने लोका के शिकावण सूं केद कर लियो ओर बिराही तालण पुर गहडे शंभु सिंहजी कदेई आया नहीं ओर सत्तगुरू सुखरामजी महाराज को ग्यान कदेई समाळया नही ।।

।। महाराणा को प्रताप ।।

गादी पर बैठया बरोबर सेंग सरदार आप आप को मावो मायलो जनो बेर भाव छोड कर सब अेक हो गया ना,बाल की अवस्था में रोज का एक हमार रूपिया हाथ खरचा के वास्ते राजा का खजाना में सूं रोज मिलता सत्ती होणो ओर नोकर तथा टाबर बेचन की चाल बंद हुंई शंभु पलटन नॉव की फोज कायम हुई राज की उन्नती हुंई बंदो बस्त हुयो सड़का डॉक्टर खाना स्कूल कायदो मे सुधार रेल गाडी हो यां खजाना में तीस लाख रूपिया सिल्लक होया,राज की पेदास पोणे पच्चिस लाख रूपिया ओर खरचा पोणे बावीस लाख रूपिया होता. हर साल तीन लाख रूपिया बचत रेवतां .शिंभु पाठशाळा ओर एक लींग देव अस्थान तथा दुसरे देव अस्थानाँ के वास्ते मेहकमा देव अस्थान की स्थापन हुई समत्त १९२५ की साल में अंग्रेज सरकार में सूं अेहद नामा हुयो समत्त १९२७ मे महाराणा अजमेर गया,जरा अंग्रेज सरकार का बडा बडा अफसर राज की सीमा पर आय कर सन मान कऱ्यो ओर एजंट गवरनल जनरल कर्नल ब्रुक अंग्रेज सरकार की तरफ सूं महाराणा ने गी.सी.एस.आई की सब सूं बडी पदवी देणे की सुचना दीवी जद महाराणा बोल्या की मैं हिंदवो सूरज बाजु हुँ तिका तारो काय के वास्ते बणु पण गवरनल जनरल समझायने पदवी देय दिवी ओर इण का राज में लडाई झगड़ो कु छ बी हुयो नही आगे जिता महाराणा हुया तिक ा सब महाराणा क ा राजमे लडाई झगडा में केइकां का राज में हजारा ओर केइंका का राज में लाखाँ मेवाड तथा बारला मिनख मार्‌या गया आगला महाराणा में लड़ाई झगड़ो नही होयो अेसो अेक बी महाराणो हुयो नहीं पण शंभुसिंह जी का राज मे तरवार म्याँन के बारे कदेई काढणे को काम पड़यो नही.रूपा हेली वाळा सूं झगड़ा को प्रसंग आयो पण झगड़ो कुछ हुयो नही ।।

।। महाराणा की लाप्रवाही ।। बे प्रवाही ।।

पोलीटिकल अेजंट टेलर राज का काम पर ध्यान बिलकुल नहिं देतो जिण सूं दूजा सरदार तथा काम दाँरा पर कोई की आँकस नहि रेणे सूं वे आप आप को घर भरणे ने

लाग गया ओर आप आपके भाई बंध तथा हेत ईरादा वाळाँ को फायदो करणे ने ढूक गया सुंदर नाथ पिरोयत आदि खानगी लोक महाराणा का मुसायब बन कर हुकम चलाणे ने लाग गया इण शिवाय रण वास में सूं न्याराई हुकम छुटता पिरोयत स्याम नाथ ओर कोठारी केसरी सिंह ये दोऊँ खरी का केणे वाळा ओर काळजी वाळा राज को फायदो करणे वाळा हा जिण सूं घणा सा लोक बांका बेरी होय कर वाँ के नुकसान पूगाणे को उपाय करणे ने लागा इण धिंगा धिंगी मे राज की व्यवस्था बिगड गई केसरी सिंग कोठारी राज को बडो फायदो करणे वाळो हो उन केसरी सिंगने लोगाँ कें केणे सूं पद सूं उतार कर बारे काढ दियो जिण सूं वो एकलींग चाल्यो गया । लारा सूं महाराणा शिंभु सिंहजी को समत्त १९३१ दूजा आसाढ शुध्द ३ने तारिक १६ जुलई सन १८७४ इं. ने पेट में दर्द हुय कर पेट का दर्द सूं दिन ८३ मांदा रेय कर समत्त १९३१ का आसोज बद १२ तारिक ७ अक्टुम्बर सन १८७४ को मृत्यु हो गई लारे सत्त्याच्यार व्हेही पण डोड़याँ बंद कर दी सत्याँ होणे वाळी नेबारे निकळणं दीवी नही इण हिसाब सूं राघोदासजी मोख गया नही.शंभु सिंहजी की ऊमर जनम तारिक २२-१२-१८४७ सूं मृत्यु तारिक ७-१०-१८७४ तांई वर्ष २६ मास ९ दिन १६ राज कऱ्यो तारिक ७-११- १८६१ सुं तारिक ७-१०-१८७४ ताँई वर्ष १२ मास १० दिन २० जिण मे ना वालिक तारिक १७-११-१८६१ सूं तारिक २५-११-१८६५ ताँई वर्ष ४ दिन ८ ओर माँदगी तारिक १६-७-१८७४ सूं तारिक ७-१०-१८७४ ताँई महिना २ दिन २१ जमले वर्ष ४ महिना २ दिन २९ राज क रणे मे सुं बाकी जाता वर्ष ८ मास ७ दिन २१ राज को उपभोग लियो. महाराणा शंभुसिंहजी को शरीर नहिं घणो ऊँचो नहि घणो ठिंगणो रंग गहुँ भरणो ललाई में ओर आंख्याँ बडी ही कयो कोई को भी सुण लेवता कोई पर वाँ की किरपा होवती उणरे वास्ते अन्याव बी कर नाखता ओर कोई ने कड़वो ओर हळ को कदेई बोल्या नहीं ।।

|| सत्तगुरू सुखरामजी महाराज को मोक्ष जाणो :-

तुलछी दासजी बॉस बरेली का जिल्हा में रछोले गाँवमे गिरधरका नॉव सूं कुरमी गंगवारी जात मे जनम्यो की,सत्तगुरू सुखरामजी महाराज ध्यान मे मालम हुई जद समत्त १८६८ की साल मारवाड़ सूं रवाना हुय कर सुखरामजी महाराज पूरब ने मारवाड सू रवाना हुया जरा माळवे हुय कर आया जरा रस्तामे शिवणी पधारिया जरा राजा चंदुलाल जी सूं संवाद हुयो.तथा शिवणी का राजा चंदुलाल महाराज को उपदेश सुण कर चेला हुय गया पछ ब्रम्हचारी तथा विठलराव को संमाद जलोदां में हुयो.समत्त १८७० में महाराज रछोले पूगा,महाराज रछोले पूग कर गिरधरजी ने महाराज पूछ्यो किऊँ गिरधर हमाने तुमा ओळख्यो के नही,जद गिरधरजी बोल्या तहिं महाराज मै नहि ओळख्या जद महाराज गिरधरजी ने दिव्य द्रिष्टी दिवी.ओर पूछ्यो ओळख्या जद गिरधरजी महाराज के पगॉ पड़ कर बोल्या हाँ महाराज ओळख्या जद महाराज बोल्या अबे तुमे हमारे देश कूं चलोगा जद

गिरधरजी बोल्या हाँ महाराज चलूँगा जद गिरधरजी को बाप वगेरे घर का बोल्या महाराज इसकूं नहि लेजा,हमारे एक ही बेटा है आप के सोबत दूसरा आदमी भेज देंगे जद महाराज बोल्या ये तो हमारे संग चलेगा दूसरा आदमी हमारे देश में पूग नहिं सक्ता। हमारे देश मे गिर धर ही पूगेगा बोल कर गिरधरजी ओर महाराज हँस्या ।।

|| रेखता ||

समत्त अठरासे बरस तेहोत्तरे संदेसो प्रेस्ते आण दियो,हुकम दरगा को हक्क प्रवानगी संत सुखरामजी बॉच लीयो शुध्द बैशाख दिन पख जब ऊतऱ्यो जुग में बास षट मास होई सिध्द अवतार जन पीर पैकंबरा थिर संसार नहिं रहयो कोई मास कातीर शुध्द तिथ तेरस थी ऊगते सूर सिध कार कीनी बारस की रात घड़ी दोय को दुगडियो देह म्रत लोक में मेल दीनी घोर घंम घोर जब आवाज हुई शब्द की रूँम हि रूँम रंरकार बोल्या नवहि द्वार होय राह नही मोख की दसवेद्वार कूं आण खोल्या ब्रम्ह सूं चाल भू लोक में आविया हंस चेताय सब काज कीया दास सुखराम प्रम धाम कूं पोंचिया सिष गिधर कूं संग लीया ।

|| भाषा ||

समत्त १८७३ का बैसाख सुध्द में महाराज ने प्रेस्तो संदेसो कयो के महाराजआपने सब संत याद करे हे जद महाराज प्रेस्ता ने बोल्या हमे मास ६ छः फेरूं जग मे रेसा जद प्रेस्तो पाछो गयो ओर काती शुध्द में महाराज को जाणे को बिचार हुवा जद अंत समे की सब त्यारी करणे ने लागा उठी ने बैकुंठी घडणे वाळो सुतार गाँवडा मे मिल्यो नही जद बरेली सूं सुतार बुलाय कर काती शुध्द १२ ने दिनका बेकुं ठी त्तयार हुवां पीछे महाराज बैकुंठी मे बैठ कर देख लिया के बरोबर हे ओर महाराज उठा का जमीदार कमळाजी गोमंदजी वगेरे ओर गॉव लोधी पूरा का मुकदम भगतरामजी सियाजी तथा अहीर वाळा नमदिया का सारा अहीर तथा बरेली वाळा अहीर महाराज को भाव राखे हा तिका अहमदाबाद मे सगळा सेवग इख्याराम जी मुरली राम प्रसाद ओर गुल गाँव मे मोतीराम मुकदम ओर बस्ती भावीक ओर खिदर पुर का रामप्रसाद मुकदम ओर रछोला का मुकदम.गोमंद राम काळू सेवाराम रूपी गिरधारी काशीराम हटीराम केसू दुलिचंद कायथ पिंडत जी.सगळाने बुलाय कर कयो आज सूं सतरा दिन सूं हमारो चेलो रण छोड अठे मारवाड़ सूं आवेलो ओर वो अठे वळणो चावेलो उणाने बळणे देइज्यो मतीना ओर हमा ओर गिरधर मोख जासा जद हमारा ब्रम्हंड फूट कर अवाजँ हुवेली वा आवाजाँ सुण कर गोरो युरोपियन देखणे सारू आवेलो उणाने हमारे पीठ पीछे भींत फोड़ कर दर्शण कराय दिज्यो ओर अंत समा के बिधि का मंगळ ९ नौ बणाया.ओर दोय घडी के तडके सत्तगुरू सुखरामजी महाराज को दसवो द्वार खुल कर मोक्ष पधाऱ्या सोबत गिरधरजी ने बी ले गया महाराज सुखरामजी के तथा गिरधरजी के ब्रम्हंड खुलने से आवाजा हुई अवाजा सुण कर गोरो साहेब बोल्यो ये अवाजाँ काय कीं हुई खबर ल्यावो जद घोडा स्वार रछोले आय कर पूछ्यो जद लोका कयो मार वाड का संत मोक्ष गया हे आ बात स्वारा जाय कर साहेब ने

कहि जद वो दर्शण करणे नें आयो जद महाराज को हुकुम साहिबने लोकां कह कर पीठ पीछे भींत फोड कर दरसण कराय दिया, पीछ महाराज को चलावो मंगळ ९ नौ में कया जिण मुजब सारी बिधि सूं करने तपना दीना.सत्तगुरू सुखरामजी महाराज मोक्ष सिधाया समत्त १८७३ का काती शुध्द १२ द्वादषी गुरूवार अश्वनि नक्षत्र अंग्रेजी ता. ३१।१०।१८१६ ई. घडी दोय के तड के चनण को गाड़ो महाराज की देह छूटी उण दिन काती शुध्द १३ ने गेबाऊं आयो. चनण का लकडा सूं भऱ्योडो गाडो गाँव के उगुणी बाजु गेबाऊं आकर छुट गयो.उण चनण का लकड़ा में महाराजने चिता दाग दियो.काती शुध्द १३ सुकरवार ने जठा पछ दिन १७ सूं सतर वें दिन सारा लोक रण छोडजी ने उडी कता बेठा ओर रण छोडजी रछोले पूगा जद लोकां रण छोडजीने गया बरोबर बोल दिया–तुमारो नांव रणछोड हे तुमा जळणे कूं आया हो पण जळणे की महाराज तुमाने मनाई कर गया हे.जद रण छोडजी जळया नहीं रणछोड़जी रछोला सूं बगतरामजी तथा इणारा माजी तथा इणारा भाई ने साथे लेयने मारवाड ने रवाना होय गया. बिराही आया गाड़ी रस्ता सूं

*****